Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> जेहने जेहवा कर्मज संचिया,
> तेहवा उदे हुवे आय।
> जिण बोयो छे पेड़ बंबूल को,
> ते अंब कियां थी खाय।।
>
> जिसने जैसा कर्म किया है, वैसा ही फल मिलता है। जिसने बबूल बोया है वह आम कहां से खाएगा?
>
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 35 • 02 जून - 08 जून, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 31-05-2025 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

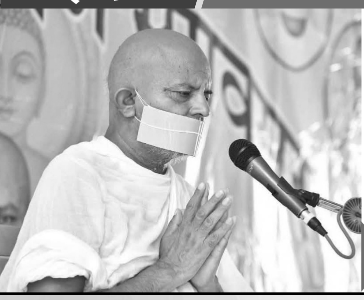

प्राणी मात्र के प्रति रहे दया का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

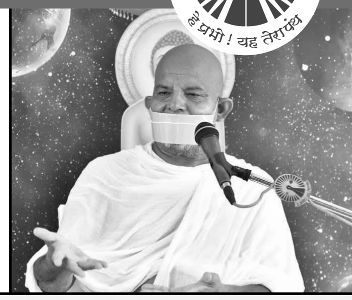

कर्म करता है कर्त्ता का अनुगमन : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

# साध्य के साथ साधन भी होना चाहिए शुद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

## मुख्यमुनि महावीरकुमारजी को मनोनयन दिवस पर मिला मंगल आशीष

भिलोड़ा।
26 मई, 2025

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग लगभग 10 कि.मी. का विहार कर भिलोड़ा के मातुश्री नवीबाई रामजी आशर विद्यालय में पधारे। अमृतमय देशना से सभी को लाभान्वित करते हुए भविष्यदृष्टा आचार्यश्री ने फरमाया कि व्यक्ति के भीतर भय की वृत्ति हो सकती है तो अभय का भाव भी हो सकता है। भय एक दुर्बलता है। व्यक्ति बीमारी, मृत्यु आदि अनेक संदर्भों में भयग्रस्त हो सकता है। कभी-कभी वह दूसरों को डराने का भी प्रयास करता है, किंतु जो दूसरों को डराता है, कभी न कभी स्वयं भी किसी भय का शिकार हो सकता है।

डरने और डराने के अलग-अलग स्तर हो सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में

डरना या डराना भी लाभप्रद हो सकता है, परंतु अंततः मोक्ष की प्राप्ति के लिए भय से मुक्त होना आवश्यक है। व्यक्ति को पाप का भी भय होता है — कि कहीं मेरे किसी कार्य से पाप का बंध न हो जाए।

'न डराना' — यह अहिंसा का भाव है। अहिंसा और संयम आधारित साधन से कार्य किया जाए। हितोपदेश के माध्यम से सामने वाले को सही मार्ग पर लाने का प्रयास हो। कभी-कभी भय के कारण भी व्यक्ति अनुचित कार्य करने से बच जाता है। साध्य के साथ-साथ साधन भी शुद्ध होना चाहिए। साध्य यदि शांति है, तो उसके लिए शुद्ध साधन होना चाहिए, यद्यपि कुछ परिस्थितियों में कठोरता का प्रयोग भी आवश्यक हो सकता है। यदि कोमल उपायों से कार्य सिद्ध न हो, तो थोड़ी कठोरता अपनानी पड़ सकती है। (शेष पेज 12 पर)

> **जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रसंग है–**
>
> संयम जीवन का मिलना और उसमें सेवा का अवसर प्राप्त होता होना। उस सेवा के मौके का सुंदर तरीके से लाभ उठाने का प्रयास चलता रहे। साध्वी वर्या भी अपने ढंग से काम करती रहें, खुद का स्वाध्याय भी चलता रहे। मुख्य मुनि का बाहुश्रुत्य भी निखरता रहे। वे अपने विकास के साथ निर्भीक जीवन जिएँ, और संगठन व्यवस्था से जुड़े रहकर अपेक्षानुसार सेवा करते रहें।

# सम्यक् ज्ञान का सार है सम्यक् आचार : आचार्यश्री महाश्रमण

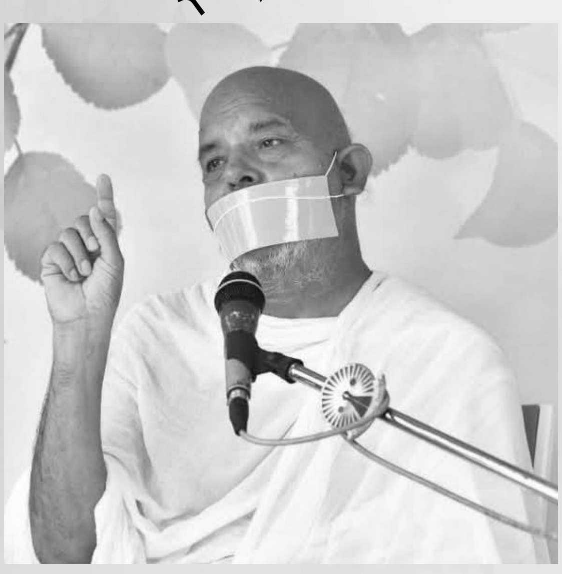

मलासा।
25 मई, 2025

जिनशासन के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातः लगभग 12 किमी का विहार कर मलासा के मलासा यूथ प्राथमिकशाला में पधारे। उपस्थित परिषद को जिनवाणी का रसास्वादन कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान और आचार — इन दोनों का अत्यधिक महत्व है। आगम में कहा गया हैः "पढमं णाणं तओ दया" — पहले ज्ञान, फिर दया।

विद्या और आचार को मोक्ष का मार्ग कहा गया है। अनेक विद्या संस्थानों में अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं, अनेक भाषाएँ सिखाई जाती हैं। परंतु एक है — सम्यक् ज्ञान। जब सम्यक् ज्ञान के साथ सम्यक् आचार भी जुड़ जाए, तब जीवन सच्चे अर्थों में सार्थक बनता है। सम्यक् ज्ञान से अनेक तत्वों की समझ हो सकती है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान का विकास होता है। ज्ञान हो जाने के बाद आदमी के संस्कार देखे जाते हैं। आदमी के भीतर सहिष्णुता है या नहीं। आदमी के भीतर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, संयम की चेतना है या नहीं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जीवन का एक भाग ज्ञान है तो दूसरा भाग आचार है। अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त करना भी एक विशेषता है, लेकिन आचरण उसका दूसरा और अनिवार्य पक्ष है।

इच्छाओं और आवश्यकताओं में संतुलन होना चाहिए। सादगी के साथ भी जीवन जीया जा सकता है। सादा जीवन, उच्च विचार — यह मानव जीवन का श्रृंगार है। वस्त्रों, आभूषणों और बाह्य सुंदरता से कहीं अधिक ज्ञान, सद्गुण और शारीरिक स्वास्थ्य का महत्व होता है। सुंदरता की तुलना में सुकृत्यशीलता अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। जीवन में सद्ज्ञान और सद्गुण का विकास होता है तो मानना चाहिए कि उसके जीवन का सर्वागींण विकास हो सकता है।

(शेष पेज 12 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 जून - 08 जून, 2025

# प्राणी मात्र के प्रति रहे दया का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

बडोली।
24 मई, 2025

संत शिरोमणि आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग नौ किमी का विहार कर बडोली के श्री आर.एच. जानी हिंगवाला हाइस्कूल में पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि व्यक्ति के भीतर अनेक प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं, भाव होते हैं। मानो भावों का एक भंडार व्यक्ति के भीतर होता है। व्यक्ति कभी क्षमा में, कभी गुस्से में, कभी मार्दव में, कभी अहंकार में, कभी संतोष में, तो कभी लालसा आदि अनेक भावों में जा सकता है। व्यक्ति के मन में दया का भाव भी होता है। दया यानी हितकर राय देना, अहिंसा रूपी रक्षा करना। मन में यह भावना रहे कि मेरी ओर से किसी को कोई तकलीफ न हो। व्यक्ति स्वयं और दूसरों की आत्मा को पापाचरण से बचाता रहे।

दुनिया में युद्ध भी चलता है, पर पहला युद्ध तो भावों में होता है, बाद में समरांगण में होता है। व्यक्ति हिंसा से बचने का प्रयास करे। निरपराध प्राणी को मारने का प्रयास न हो — यही अनुकंपा की भावना है।

भगवान महावीर और मुनि मेघ के प्रसंग के माध्यम से पूज्य प्रवर ने समझाया कि भगवान ने अपने शिष्य को गिरते हुए बचा लिया। किसी गिरते हुए को बचा लेना उपकार का कार्य होता है। व्यक्ति थोड़ी सी कठिनाई से घबराए नहीं। भोले का भगवान होता है। पूर्वकृत पुण्य भी कभी विषम स्थितियों में रक्षा कर देते हैं। भगवान महावीर जैसे महान वैद्य ने ऐसी दवा दी कि मेघ मुनि को जातिस्मरण ज्ञान हो गया और वे संयम में स्थिर हो गए। हाथी में भी कितनी अनुकंपा थी कि मेरे कारण खरगोश न मर जाए। ऐसी अनुकंपा व्यक्ति में भी हो। प्राणी मात्र के प्रति दया और अहिंसा की भावना रहे।

साधु के लिए तो ईर्या समिति का नियम होता है। गृहस्थ भी चलने-फिरने में ध्यान दें। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से जीवन में अहिंसा की चेतना जागृत हो सकती है। प्रेक्षाध्यान से राग-द्वेष से मुक्त होने का प्रयास किया जा सकता है।

हमारे जीवन में धर्म रहे। जैन हो या अजैन, सब गुड मैन बनें। हर धर्म में अहिंसा, सच्चाई, ईमानदारी और संयम की बात बताई जाती है। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। ईमानदारी एक संपत्ति है — इससे आत्मा को पापों से बचाया जा सकता है। आज बडोली में पुनः आगमन हुआ है। बडोली की जनता में धर्म की भावना प्रबल बनी रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत की आत्मा गाँवों में रहती है। पूज्य आचार्यवर अपनी यात्रा में छोटे-छोटे गाँवों का स्पर्श कर लोगों की अध्यात्म चेतना जागृत करा रहे हैं। जिस व्यक्ति का संकल्प दृढ़ होता है, वह कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का बड़ा महत्व होता है। जो व्यक्ति गुरु की चरण-शरण में रहता है, उसकी समस्याएँ दूर हो जाती हैं। गुरु हमारे त्राण-प्राण होते हैं। गुरु के द्वारा नई दिशा और दृष्टि मिल सकती है।

पूज्यवर के स्वागत में मितेश श्रीश्रीमाल, स्कूल प्रिंसिपल दीपकभाई पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने पच्चीस बोल पर प्रस्तुति दी। प्रेक्षा, अल्पा और संगीता दुगड़ ने चार कषायों पर सुंदर प्रस्तुति दी। स्थानीय बहू मण्डल, युवक मण्डल ने पृथक-पृथक गीतों का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, गंगाशहर द्वारा 7 दिवसीय ''सीपीएस – कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग'' कार्यशाला का आयोजन महिला मंडल भवन, गंगाशहर में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ शांतिनिकेतन सेवा केंद्र की व्यवस्थापिका साध्वी विशद प्रज्ञाजी के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पीयूष लूणिया ने जानकारी देते हुए बताया कि इस कार्यशाला में केंद्रीय जोनल ट्रेनर आयुषी रांका, डॉ. रमेश भंसाली और नेशनल ट्रेनर चिराग पामेचा द्वारा 62 प्रतिभागियों को स्टेज पर आत्मविश्वास के साथ बोलने के गुर सिखाए गए। उन्हें बताया गया कि मंच पर बोलते समय भय को कैसे दूर करें और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करें ताकि श्रोता ध्यानपूर्वक सुनें।

प्रतिभागियों को विभिन्न विषयों पर वक्तव्य एवं समूह नाट्य प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया गया।

तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष महावीर फलोदिया ने बताया कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य युवाओं को आत्मविश्वास के साथ सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत होने के लिए तैयार करना है, ताकि वे गंगाशहर की सकारात्मक पहचान पूरे देश में बना सकें। मंत्री भरत गोलछा ने बताया कि कार्यशाला का दीक्षांत समारोह आशीर्वाद भवन में आयोजित हुआ जिसमें उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी का सान्निध्य एवं उद्बोधन प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अभातेयुप उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता ने की, जिन्होंने उद्घाटन की घोषणा की। कार्यक्रम में शाखा प्रभारी श्रेयांश बैंगानी, मुख्य अतिथि डॉ. अजय जोशी, मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. चक्रवर्ती श्रीमाली, कार्यक्रम प्रायोजक बीकानेर के उद्योगपति बसंत नौलखा परिवार, अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी, प्रतिभागी एवं उनके परिजन तथा तेयुप व किशोर मंडल की टीम उपस्थित रही।

अध्यक्षता करते हुए जयेश मेहता ने प्रतिभागियों के विचारों को सुना और उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। शाखा प्रभारी श्रेयांश बैंगानी ने बताया कि गंगाशहर की तेयुप टीम बिना किसी अतिरिक्त निर्देश के भी सभी कार्यक्रमों का सफल आयोजन करती रहती है। मुख्य अतिथि डॉ. अजय जोशी एवं मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. चक्रवर्ती ने भी विचार व्यक्त किए।

नेशनल ट्रेनर चिराग पामेचा ने कहा कि गंगाशहर में आकर उन्हें गौरव की अनुभूति हुई। सभी प्रतिभागियों ने सात दिनों तक नियमित उपस्थिति दर्ज कर अपने कार्यों को कुशलता पूर्वक संपादित किया।

समारोह के अंत में सभी अतिथियों को स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। मंत्री भरत गोलछा ने कार्यक्रम के प्रायोजक बसंत नौलखा परिवार, आशीर्वाद भवन, अतिथियों, अभिभावकों एवं सहयोगियों — मांगीलाल बोथरा, जितेन्द्र रांका, चैतन्य रांका, संदीप रांका, ऋषभ लालाणी, ललित राखेचा, जयप्रकाश कच्छावा एवं मनीषा जैन — सहित संपूर्ण तेयुप एवं किशोर मंडल टीम का आभार व्यक्त किया।

# आचार्य महाश्रमण आर्ट गैलेरी का आयोजन

साउथ हावड़ा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा महाश्रमण आर्ट गैलरी का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा भवन, साउथ हावड़ा में किया गया।

इस अवसर पर स्थानीय सदस्यों द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण जी को केंद्र में रखकर प्रेरणादायक कलात्मक कृतियाँ सृजित की गईं एवं दर्शकों के अवलोकनार्थ प्रदर्शित की गईं।

प्राप्त 13 कृतियों में से 7 उत्कृष्ट कृतियों का चयन कर उन्हें आचार्य श्री के सान्निध्य में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय आर्ट गैलरी हेतु प्रेषित किया गया।

तेयुप साउथ हावड़ा अध्यक्ष गगनदीप बैद ने इस अवसर पर कहा, "ऐसी कलात्मक अभिव्यक्तियाँ न केवल धर्म की प्रभावना का सशक्त माध्यम बनती हैं, बल्कि कलाकार के आत्मिक एवं आध्यात्मिक विकास में भी सहायक सिद्ध होती हैं।"

निर्णायक मंडल ने सभी कृतियों का सूक्ष्मता से अवलोकन कर निष्पक्ष निर्णय प्रदान किया।

अंत में सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार ज्ञापित किया गया एवं उनके उज्ज्वल आध्यात्मिक भविष्य की मंगलकामनाएँ दी गईं।

# मानवता की सेवा में एक और कदम : ATDC में पहली CT SCAN मशीन का उद्घाटन

**पूर्वांचल, कोलकाता।**

तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर-2 का उद्घाटन तथा पूरे भारतवर्ष की ATDC में पहली CT SCAN मशीन का अनावरण जैन संस्कार विधि के साथ भव्य रूप से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से हुआ, जिसका संचालन मुख्य संस्कारक सुरेंद्र सेठिया ने किया। विधि में पंकज आंचलिया, सुमेरमल बैद और अनूप गंग ने सह-संस्कारक के रूप में सहयोग दिया।

उद्घाटन समारोह में सुप्रसिद्ध उद्योगपति ओम जालान ने फीता काटकर सेंटर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष नवीन सिंघी ने ATDC की स्थापना से लेकर अब तक की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला और पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ एवं पूर्व मंत्री रवि दुगड़ के योगदान को सराहा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में युवा संगठन विकास कार्यशाला एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुनिश्री ने युवाओं को सेवा एवं संगठन निर्माण हेतु नई प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के पहले चरण का संचालन मुनि परमानंद जी तथा दूसरे चरण का संचालन मंत्री मुकेश सेठिया ने किया। दोनों चरणों में सभी सहयोगियों का सम्मान एवं अभिनंदन किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने संबोधन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के विभिन्न आयामों की जानकारी दी और तेयुप पूर्वांचल को हॉस्पिटल स्थापना एवं संघ सेवा में निरंतर अग्रसर रहने हेतु प्रेरित किया। महामंत्री अमित नाहटा ने CT SCAN मशीन एवं सेंटर-2 के सफल संचालन में परिषद की पूरी कार्यकारिणी विशेषतः अध्यक्ष नवीन सिंघी की सराहना की।

कार्यक्रम में अणुविभा अध्यक्ष प्रताप दुगड़, महासभा कोषाध्यक्ष मदन मरोठी, जैन विश्व भारती सहमंत्री नवीन बेंगानी, पूर्व अभातेयुप अध्यक्ष रतन दुगड़, ATDC राष्ट्रीय प्रभारी सौरभ मुणोत, समाजसेवी भीखम चंद पुगलिया एवं अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साथ ही अभातेयुप एवं तेयुप पूर्वांचल के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं समाजजन भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

# विश्व शांति अनुष्ठान का आयोजन

**लाडनूं।**

जैन विश्व भारती एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के संयुक्त तत्वावधान में विश्व शांति अनुष्ठान का आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलताजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, मुमुक्षु निदेशिका समणी अमलप्रज्ञा व समणी ऋजुप्रज्ञा के सान्निध्य में अर्हम सभागार, आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षाध्यान केन्द्र में आयोजित किया गया।

विश्व शांति की मंगलकामना के लक्ष्य के साथ आयोजित इस कार्यक्रम में सतत् मंत्र जप साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी विभाश्रीजी, साध्वी स्वस्तिक प्रभाजी, साध्वी तेजस्वीप्रभाजी, साध्वी रोहिणीप्रभाजी व समणीवृन्द द्वारा समवेत स्वर में किया गया।

ऐसा प्रतीत हुआ कि सम्पूर्ण वातावरण में आध्यात्मिक ऊर्जा व्याप्त हो गई। आध्यात्मिकता एवं पवित्र लक्ष्य के इस अनुष्ठान में सम्पूर्ण नगर से बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

आयोजन में विशेष रुप से जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दुगड़, परिसर संयोजक व पूर्व अध्यक्ष धरमचंद लुंकड़, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डीडवाना हिमांशु शर्मा, डीएसपी विकी नागपाल, सीआई महीराम विश्नोई व जोगेन्द्र सिंह व जैन विश्व भारती संचालिका समिति सदस्य इन्दर बैंगाणी, प्रवीण बरड़िया, राजेन्द्र खटेड़ आदि की उपस्थिति रही। नगर की प्रमुख सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद, ओसवाल मित्र मंडल, विमल विद्या विहार स्कूल, सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला आदि संस्थाओं एवं गणमान्यजन ने भी प्रतिभागिता की।

तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, अणुव्रत समिति, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम आदि की सहयोगी भूमिका रही।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में तेरापंथी सभा के मंत्री राकेश कोचर, डा. विजयश्री शर्मा, संजय बोथरा, इन्दरचंद बुच्चा, दीपक महतो, आशीष गुर्जर की विशेष भूमिका रही। दोनों संस्थाओं की ओर से आभार ज्ञापन राजेन्द्र खटेड़ द्वारा किया गया।

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं। -आचार्य श्री महाश्रमण

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए। -आचार्य श्री महाश्रमण

# आचार्य महाश्रमण जीवन दर्शन प्रतियोगिता का आयोजन

**कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।**

आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा दिवस की पूर्व संध्या के अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण जीवन दर्शन पर आधारित प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 10 दंपत्ति समूहों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान निर्मला एवं निर्मल कोठारी ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर अशोक एवं सुमन जैन रहे। तृतीय स्थान संयुक्त रूप से दो समूहों—सुशील पटावरी एवं शारदा पटावरी, तथा अरविंद दुगड़ एवं रोमी दुगड़—को प्राप्त हुआ।

सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को मिलाप चंद गेलड़ा और राजेश गेलड़ा द्वारा सम्मानित किया गया। साध्वी कुन्दनरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा, ꠲पंचम काल में हमें चतुर्थ काल का अहसास होता है।

तीर्थंकरों की अनुपस्थिति में भी तीर्थंकर तुल्य प्रकाश युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी में अनुभव होता है। 52वां दीक्षा दिवस संयममय जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

गुरुदेव का संयम अद्वितीय है, और यही वह शक्ति है जिसमें शाश्वत आनंद का रहस्य निहित है। दीक्षा त्याग के मार्ग पर अग्रसर होने का नाम है, यह अनासक्त चेतना के उत्थान का माध्यम है, तथा कषायों के उपशमन का पावन अवसर है।

इस आयोजन में संजय चोरडिया ने क्रम निर्धारण का कार्य सुचारू रूप से संभाला। बच्चों ने प्रतियोगियों के समय का सटीक मूल्यांकन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों की सहभागिता रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
02 जून - 08 जून, 2025

# युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

## संयम साधना के शिखर पुरुष हैं आचार्य श्री महाश्रमण

**बीदासर।** युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्याएँ—'शासनश्री' साध्वी यशोमतीजी, 'शासनश्री' साध्वी साधनाश्रीजी, 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी एवं बीदासर केन्द्र की व्यवस्थापिका साध्वी मंजुयशाजी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस—तीनों का उत्सव 'महाश्रमण अभिवंदना समारोह' का कार्यक्रम बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। साध्वी स्तुतिप्रभाजी एवं साध्वी मानसप्रभाजी ने महाश्रमण अष्टकम् का मधुर संगान किया। साध्वीश्री ने अपने आराध्य के प्रति मंगलकामना के सुमन समर्पित करते हुए कहा—₹भव्य ऋषि परंपरा में अनेक ऋषि महान हुए हैं। उन्होंने अपनी त्याग, तपस्या एवं प्रखर साधना से इस पुण्य धरा को अध्यात्ममय बनाया है। वर्तमान समय में भी अनेक त्यागी तपस्वी संतों की अपनी प्रखर साधना से जन-जन को अध्यात्म का पावन संदेश मिल रहा है। उन्हीं संत महात्माओं की श्रृंखला में एक पवित्र आत्मा का नाम है—आचार्य महाश्रमण।₹

मात्र 12 वर्ष की उम्र में संन्यास पथ पर अग्रसर हो गए। संयम स्वीकार करने के बाद आप अपनी साधना में रमण करते हुए बड़ी जागरूकता से आगे बढ़ते गए। आपकी सहनशीलता, विनयशीलता, श्रमशीलता, स्वाध्यायशीलता, संयम साधना के प्रति जागरूकता, स्थिरता, धैर्य, गंभीरता, समर्पण भाव, निष्ठा पंचक, आदि विरल विशेषताओं ने गुरु के दिल में एक विशेष स्थान बनाया।

आपके इस उज्ज्वल व्यक्तित्व का अंकन करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने आपको मुनि मुदित से ₹महाश्रमण₹ बनाया। आचार्य श्री महाप्रज्ञाजी ने आपकी योग्यता को देख 'युवाचार्य महाश्रमण' बनाया और फिर आप आचार्य महाश्रमण बने। साध्वियों ने उन्हें अनेक विशेषताओं का पुंज बताया। उन्होंने आगे कहा—₹आपने लोक कल्याण हेतु करीब 60,000 किलोमीटर की पदयात्रा कर नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति के अभियान से लाखों व्यक्तियों को प्रेरणा देकर उनके जीवन को सही दिशा में प्रशस्त किया।₹

इस अवसर पर साध्वी विमलप्रभाजी, साध्वी जयन्तयशाजी, साध्वी इंदुप्रभाजी, साध्वी ऋजुप्रभाजी, साध्वी मानसप्रभाजी, साध्वी स्तुतिप्रभाजी आदि ने आचार्य महाश्रमण के विराट व्यक्तित्व के बारे में सामूहिक रूप में एक रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक था—₹स्पेशल डे, गॉड डे₹। इसमें ज्ञानशाला के बच्चे भी शामिल थे। साध्वियों द्वारा अपने आराध्य को एक मधुर गीत के माध्यम से मंगलकामनाएं प्रेषित की गईं। अट्ठारह वक्ताओं ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिन्मयप्रभाजी ने किया।

------------------------

## दिव्यविभूति हैं आचार्यश्री महाश्रमण

**जयपुर।** 'शासनगौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव का कार्यक्रम अत्यंत उत्साहपूर्वक श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया गया। नमस्कार महामंत्र तथा ₹ऊँ ह्रीं क्लीं श्री महाश्रमण गुरवे नमः₹ के सामूहिक मंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राहुल छाजेड़ ने महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया।

भिक्षु साधना केन्द्र, श्यामनगर, जयपुर में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में 'शासनगौरव' साध्वीश्री ने गुरुदेव की अभिवंदना करते हुए कहा, "आचार्य महाश्रमणजी एक दिव्यविभूति हैं। उनका जीवन प्रबल पुरुषार्थ की गौरवगाथा है। वह देश और काल धन्य होते हैं जहाँ आचार्य श्री महाश्रमण जैसी आध्यात्मिक विभूतियों का अवतरण और विहरण होता है। आचार्य श्री महाश्रमण मानवीय संवेदना के संवाहक हैं, करुणा के निर्मल निर्झर हैं। उनकी ज्ञानसंपदा विलक्षण है।"

आचार्यप्रवर के प्रेरक प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा, "महानता उसी के द्वार पर दस्तक देती है, जो अपना जीवन महान लक्ष्य के लिए समर्पित कर देता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आचार्यप्रवर महाश्रमण जैसे गुरु मिले, जो हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं।"

साध्वी मधुलता जी ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के बचपन की घटनाओं के माध्यम से उनके विकास की यात्रा के अनछुए प्रसंग प्रस्तुत किए। साध्वी समितिप्रभा जी, साध्वी संस्कृतिप्रज्ञा जी ने दीक्षागुरु के प्रति श्रद्धापूरित भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किए।

तेरापंथी सभा के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, तेरापंथ युवक परिषद जयपुर के मंत्री अभिषेक भंसाली, तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम जयपुर से सुशीला नखत, गायक संदीप भंडारी, पवन जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। द्विदिवसीय कार्यक्रम का कुशल संचालन क्रमशः साध्वी मधुलता जी एवं सुशीला नखत ने किया।

------------------------

## पापभीरु और आत्मार्थी हैं आचार्य श्री महाश्रमण

**नोखा।** डॉ. मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव का कार्यक्रम तेरापंथ भवन, नोखा में मनाया गया। मुनिश्री ने जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आचार्य श्री करुणा के सागर, पापभीरु, आत्मार्थी एवं जन-जन के लिए त्राण शरण हैं। उन्होंने 60,000 किलोमीटर से अधिक पदयात्रा कर लोगों को सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति का सन्देश दिया है। मुनि उपशम कुमार ने संस्मरण सुनाते हुए आचार्य महाश्रमण के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल ने वर्धापना गीतिका प्रस्तुत की। मंडल अध्यक्षा सुमन मरोठी ,कवि इंदरचंद बैद, उपासक अनुराग बैद, नीलम पुगलिया, मंत्री मनोज घीया, सुरेश बोथरा ने आचार्य श्री महाश्रमण के अनासक्त जीवन पर भावांजलि अर्पित की। संचालन सुनील बैद ने किया।

------------------------

## पुरुषार्थ-पराक्रम के पुरोधा हैं आचार्यश्री महाश्रमण

**वापी।** प्रोफेसर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में वापी शहर में आचार्यश्री महाश्रमण जी का 64वां जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित विशाल परिषद को संबोधित करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा, ₹आचार्यश्री महाश्रमण जी संत परंपरा के ख्यातनाम, विशिष्ट संत हैं। उनके मानवीय, प्रेमयुक्त व्यक्तित्व को शब्दों से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। पुरुषार्थ और पराक्रमयुक्त उनकी जीवनशैली से हर समस्या का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। वे किसी समुदाय विशेष के नहीं, अपितु मानवमात्र के भीतर शक्ति और प्रकाश संप्रेषित करने वाले आचार्य हैं। हजारों-हजारों किलोमीटर की यात्रा कर उन्होंने सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति और अहिंसा का शंखनाद किया है। उनके जीवन की गौरवगाथा, श्रम की अकथ कहानी है। लाखों भक्तों और शरणागतों के दुःख को दूर करने हेतु उनके दिल से करुणा और अनुकम्पा की धारा निरंतर बह रही है। उनका जीवन शारीरिक और मानसिक श्रम की शाश्वत प्रेरणा है। आशीर्वाद की मुद्रा में उठे उनके दोनों हाथ हर दर्शनार्थी के लिए आस्था और विश्वास का केन्द्र हैं।₹

साध्वीश्री ने आगे कहा, ₹आज पीयूष कच्छारा के गृह प्रांगण में प्रथम बार युगप्रधान आचार्य महाश्रमण जन्मोत्सव का यह ऐतिहासिक कार्यक्रम भव्यता के साथ आयोजित हुआ। अनेक धर्मसंप्रदाय के प्रतिनिधियों ने श्रद्धास्वर प्रस्तुत किए। यह आचार्यश्री महाश्रमण जी के विराट व्यक्तित्व का प्रभाव है। आज सम्पूर्ण मानव जाति के भाग्योदय का दिन है।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी वृंद के मंगल संगान से हुई। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी अतुलयशा जी और साध्वी राजुलप्रभा जी ने अपने वक्तव्यों और कविताओं के माध्यम से आराध्य की अभिवंदना की। साध्वी वृंद ने सामूहिक संगान से पूरे वातावरण को महाश्रमणमय बना दिया।

इस अवसर पर स्वामीनारायण संप्रदाय के संत माधवस्वामी और विधनन स्वामी, बोहरा समाज की ओर से मंसूर भाई मर्चेन्ट और मुस्तफा दाउदी मर्चेन्ट ने आचार्यश्री के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। मुस्कान बोथरा ने सुमधुर गीत का संगान किया।

राजस्थान सेवा मंडल अध्यक्ष रमेश मेहता, जैन विश्व भारती ट्रस्टी राजेश दुगड़, तेरापंथ सभा वापी के मंत्री विमल झाबक, जैन संस्थान, जैन एकता मंच अध्यक्ष चौथमल सिंघवी, विश्व हिंदू परिषद वलसाड जिला के अध्यक्ष अभय नाहर ने भी आचार्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। तेरापंथ महिला मंडल ने सामूहिक संगान के माध्यम से 'ज्योतिचरण वर्धापन' प्रस्तुत किया।

श्रेयांस कच्छारा ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। समस्त आगंतुक अतिथिगण का कच्छारा परिवार की ओर से भावपूर्ण स्वागत किया गया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन डॉ. साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया।

------------------------

## उल्लेखनीय है आचार्य श्री महाश्रमण की अप्रमत्तता, श्रमशीलता एवं नेतृत्व क्षमता

**मानसरोवर गार्डन, दिल्ली।** युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी के सान्निध्य में आचार्यश्री के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव, दीक्षा दिवस का कार्यक्रम प्रवीण, वरुण डूंगरवाल, मानसरोवर गार्डन के निवास स्थान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मानसरोवर गार्डन की बहनों ने मंगलाचरण से किया।

आचार्य प्रवर की अभिवंदना में भावाभिव्यक्ति देते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा - आसमान के सितारों को, रेगिस्तान के बालू कणों को एवं सावन की बरसाती बूंदों को गिनना जितना मुश्किल है उससे भी अधिक मुश्किल है आचार्य प्रवर की विशेषताओं का आंकलन करना। साध्वी श्री ने कहा कि आचार्य प्रवर की अप्रमत्तता, श्रमशीलता एवं नेतृत्व क्षमता उल्लेखनीय है। आपके तेजोमय आभावलय, चमकते हुए नयन एवं आशीर्वाद मुद्रा में उठे हुए हाथों को देखकर हर व्यक्ति श्रद्धानत हो जाता है। साध्वी सुव्रतांजी, साध्वी सुमनप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति देते हुए सुमधुर गीतिका से श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया।इस अवसर पर टीपीएफ की अध्यक्षा कविता बरड़िया, पश्चिमी दिल्ली महिला मंडल की मंत्री मीना डूंगरवाल, अभातेयुप राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य एवं दिल्ली तेयुप पूर्व अध्यक्ष विकास सुराणा, मानसरोवर गार्डन सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं दिल्ली सभा साहित्य प्रभारी सुरेश कोठारी, दिल्ली सभा के मंत्री मनोज बोरड़ आदि सभी ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष नरेन्द्र पारख ने भी वक्तव्य के साथ गीतिका का संगान किया। मानसरोवर गार्डन ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका पूर्णिमा पारख, सह-मुख्य प्रशिक्षिका शैफाली मेहता ने भी अपने भावों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का सुन्दर संयोजन साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने किया। अंत में सभा के मंत्री अजय रांका ने आभार ज्ञापन किया।

# युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

## प्रखर प्रतापी नेतृत्व धर्मसंघ को नई ऊंचाईयां देने वाला है

**सांडवा।** साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण के 64वां जन्म दिवस एवं 16वें पदाभिषेक दिवस का भव्य कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने महाश्रमण अष्टकम् से किया।

साध्वी संघप्रभा जी ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना करते हुए अपने उद्बोधन में कहा - आचार्य महाश्रमण का जन्म साक्षात् एक देव पुरुष का अवतरण है, जिनकी मुखमुद्रा की मुस्कान जहाँ लाखों लोगों की समस्याओं का सटीक समाधान है वहीं एकादशमाधिनायक के रूप में उनका प्रखर प्रतापी नेतृत्व तेरापंथ धर्म संघ को नई ऊंचाईयां देने वाला है। उनका प्रबंधन कौशल, समय, स्वास्थ्य, श्रम व शक्ति का नियोजन तथा वाणी का सम्यक संयोजन हर व्यक्ति के लिए प्रशिक्षण का अपूर्व आयाम है। इसी श्रृंखला में साध्वी सोमश्रीजी ने आचार्य श्री महाश्रमण को विविध उपमाओं से उपमित करते हुए उनके उपकारों का वर्णन किया।

कन्या मंडल संयोजिका जया भंसाली ने 'वंदन है गुरुराज' सुमधुर गीतिका से वातावरण को महाश्रमणमय बना दिया। तेरापंथ सभा की ओर से बजरंग भंसाली ने 'महाश्रमण' शब्द की रोचक तरीके से व्याख्या की। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कविता प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थित रही।

---------------------

## "महाश्रमण अभिवंदना" कार्यक्रम का हुआ भव्य आयोजन

**यशवंतपुर।** युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के पावन अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् यशवंतपुर द्वारा "महाश्रमण अभिवंदना" भक्ति संध्या का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा भवन, यशवंतपुर में किया गया। तेयुप अध्यक्ष महावीर गन्ना ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

इस भक्ति संध्या का मुख्य आकर्षण रहा संगीतमय भक्ति वंदना, जिसमें संगायक देवेन्द्र नाहटा एवं गुलाब बाँठिया द्वारा प्रस्तुत मधुर भजनों ने उपस्थित जनसमुदाय को भावविभोर कर दिया। तेयुप साथी हितेश दक द्वारा भी प्रस्तुति दी गई। इस आयोजन में श्रद्धा, भक्ति और संगीत के भावों का अद्भुत संगम देखने को मिला।

कार्यक्रम में तेयुप पदाधिकारी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया, मंत्री अनिल दक एवं उनकी टीम, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मीना दक एवं उनकी टीम, तेयुप टी-दासरहल्ली के अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक पोखरणा ने किया। संयोजक ऋषभ बरडिया ने आभार व्यक्त किया।

इस आयोजन में तेरापंथ सभा एवं तेरापंथ महिला मंडल की सक्रिय सहभागिता रही।

----------------------

## युवा पीढ़ी के रोल मॉडल हैं महाश्रमण

**श्यामनगर, जयपुर।** अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर द्वारा शासन गौरव, बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) का आयोजन श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केन्द्र में किया गया। कार्यक्रम का मंगलमय शुभारंभ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा महाश्रमण अष्टकम् के संगान से हुआ। तेयुप जयपुर के सदस्यों ने भावपूर्ण गीतिका का संगान किया।

तेयुप उपाध्यक्ष श्रेयांस कोठारी ने आगंतुक महानुभावों का स्वागत किया। अभिवन्दना के क्रम में आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों से आचार्यप्रवर के कर्तृत्व और व्यक्तित्व को उपमित करते हुए बहुत सुंदर विचार रखे। सभा जयपुर के उपाध्यक्ष व तेयुप जयपुर के प्रबुद्ध विचारक सुरेन्द्र सेठिया ने भी अपनी भावनायें व्यक्त की।

साध्वीवृन्द द्वारा प्रस्तुत 'वंदना महाश्रमण' गीत की भक्ति तरंगों ने वातावरण में मधुरिमा घोल दी। शासनगौरव साध्वी कनकश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैशाख माह को हिन्दु परंपरा में अति उत्तम माना गया है। आचार्यप्रवर के जीवन के तीन-तीन क्रांतिकारी उत्सव यथा जन्मोत्सव, दीक्षा महोत्सव और आचार्य पदाभिषेक महोत्सव इस पवित्र वैशाख मास में ही संपन्न हुए हैं।"

आचार्यप्रवर के जीवन प्रसंगों की चर्चा करते हुए साध्वीश्री ने उनकी सादगी पूर्ण जीवन शैली, कठोर परिश्रम, आत्म नियंत्रण की क्षमता, तपस्विता, तेजस्विता आदि का उल्लेख किया। साध्वीश्री ने आगे कहा आचार्य महाश्रमण युवाओं के रोल मॉडल हैं, जिनसे समाज के ही नहीं अपितु पूरे राष्ट्र के हजारों लाखों युवा नित प्रेरणा प्राप्त कर रहे है।

साध्वीश्री ने धर्मसंघ की नवम् साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के मनोनयन दिवस पर शुभकामनायें व्यक्त की। साध्वी मधुलता जी ने आचार्यप्रवर के बचपन की गतिविधियों और प्रेरक प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुये कहा कि, "जिस प्रकार स्वाति नक्षत्र में वर्षा की बूंदें पात्रानुसार विष या मोती बन जाती है उसी प्रकार सुयोग्य व्यक्ति गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर सुमेरू के शिखर तक पहुंच सकता है।"

कार्यक्रम में महाश्रमण आर्ट गैलेरी में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के मंत्री सुरेन्द्र सेखानी, सिरीयारी संस्थान के मंत्री मर्यादा कुमार कोठारी, भिक्षु साधना केंद्र समिति के अध्यक्ष प्रवीण बांठिया आदि ने गुरूचरणों में अपनी अभिवन्दना व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन व आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री अभिषेक भंसाली द्वारा किया गया। सायंकालीन सत्र में साध्वीश्री के सान्निध्य में महाश्रमण अभिवंदना (भक्ति की शाम - ज्योतिचरण के नाम) का आयोजन किया गया। साध्वीवृन्द ने सरस मधुर गीत के माध्यम से आचार्यप्रवर के प्रति अपनी अभिवंदना व्यक्त की। तेयुप जयपुर अध्यक्ष गौतम बरड़िया नें भक्ति संध्या में समागत श्रावक समाज का स्वागत करते हुये अपनी अभिवन्दना समर्पित की।

मुख्य गायक कमल छाजेड़ ने आचार्यप्रवर की अभिवंदना में सुमधुर गीतों से समां बांधा। स्थानीय कलाकार पवन जैन, मोहित सेठिया, मनीष चौरड़िया, श्रद्धा जैन, समाजसेवी सम्पत बच्छावत ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के भक्ति गीतों को जनमेदिनी के मुख पर मुखरित कर दिया। तेयुप जयपुर द्वारा सभी संगायकों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सौरभ जैन ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री अभिषेक भंसाली ने किया।

----------------------

## महाश्रमणोत्सव कार्यक्रम समायोजित

**किलपॉक,चेन्नई।** मुनि मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, किलपॉक, चेन्नई के तत्वावधान में कुबेर बैंक्विट हॉल में आचार्य श्री महाश्रमणजी के 64वें जन्मदिवस, 16वें पदाभिषेक दिवस और 52वें दीक्षा दिवस पर 'महाश्रमणोत्सव' कार्यक्रम समायोजित किया गया।

नमस्कार महामंत्र समुच्चारण से कार्यक्रम का शुभारम्भ कर जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए मुनि मोहजीतकुमारजी ने गण के श्रृंगार आचार्य श्री महाश्रमण के कर्तृत्व और व्यक्तित्व को व्याख्यायित करते हुए कहा कि, "आचार्य महाश्रमण एक ऐसे व्यक्तित्व हैं, जो स्वयं अपने आप के साथ दूसरों को भी आलोकित करते हैं। उनका त्यागबल, वाणीबल, संयम बल अनुपम है। एक ओर उनके जीवन में साधना की ऊंचाई है, तो दूसरी और व्यवहार की गहराई है।"

मुनिश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि, "हम गूगल का अध्ययन करें या न करें, लेकिन गुरु का दिशा दर्शन जरूर प्राप्त करें। गुरुदेव हर समय स्वयं अपडेट रहते हैं और शासन को भी अपडेट करते रहते हैं। उनके जीवन की लाइट हमें ब्राइट करती रहे।" मुनि भव्यकुमारजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए आगम में वर्णित श्रमणत्व के अस्तित्व की आचार्य महाश्रमण के कर्तृत्व से तुलनात्मक प्रस्तुति दी।

मुनि जयेशकुमारजी ने कहा कि, "आचार्य महाश्रमण की प्रेरणा हर किसी के जीवन निर्माण का आधार है। गुरु शिष्य के विकास में निरंतर ऊर्जा भरने का प्रयास करते हैं। गुरु माता-पिता, मार्गदर्शन के साथ मित्र के समान होते हैं।

मुनि जयेशकुमार जी ने स्वरचित गीत का संगान किया। अध्यक्ष अशोक परमार के साथ गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्य भिक्षु आख्यान साहित्य पर आधारित 'भिक्षु साहित्य रत्न प्रश्नमाला प्रतियोगिता' पुस्तिका मुनिश्री को निवेदन कर उसका लोकार्पण किया।

कन्या मंडल ने श्रद्धावंदना, पुरुषवाक्कम भिक्षु मण्डली ने गीत और दक्ष डागा ने विचारों के साथ अपनी प्रस्तुति दी। मंत्री विजय सुराणा ने स्वागत स्वर और उपाध्यक्ष धर्मीचन्द छल्लाणी ने आभार व्यक्त किया।

------------------------

## आचार्य महाश्रमण की सन्निधि में होता है अकल्पित शांति का अनुभव

**कानपुर।** साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण का 52वां दीक्षा दिवस 'युवा दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद् तथा तेरापंथी सभा द्वारा संयुक्त रूप से गीतिका का संगान किया गया। साध्वी स्वर्णरेखा जी ने कहा कि, "आचार्य महाश्रमण एक ऐसे वट वृक्ष का नाम है जिसकी सघन शीतल छाया में बालक, युवक, वृद्ध सभी अकल्पित शांति का अनुभव करते हैं।

आज सभी का जीवन निराशा, अवसाद, कुंठा, तनाव आदि से ग्रसित है। ऐसे में आचार्य प्रवर ऐसी शीतल छावं प्रदान करते हैं जिससे आगत व्यक्ति चाहे किसी भी समस्या से ग्रस्त हो, वह तृप्ति का, आनंद का रसपान करता है।

"साध्वी स्वास्तिकाश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि, "आज आचार्य महाश्रमण जैसे महामानव को चतुर्विध धर्म संघ वर्धापित कर रहा है और सभी यही मंगल कामना कर रहे हैं कि आपके मंगल अनुशासन में तेरापंथ धर्म संघ नूतन ऐतिहासिक इतिहास का सृजन करता रहे।"

सभा अध्यक्ष प्रवीण सुराणा एवं मंत्री आलोक पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक, जिसमें बच्चों ने विभिन्न धर्म गुरुओं की भूमिकाओं के माध्यम से गुरु के गुणों की विस्तार पूर्वक व्याख्या की।

ज्ञानशाला के बच्चों ने आचार्य महाश्रमण के दीक्षा दिवस के घटनाक्रम को भी जीवंत किया। महिला मंडल द्वारा अष्ट मंगल की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के पूर्व मंत्री संदीप जम्मड ने किया।

युगप्रधान गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस पर विशेष

# बाह्याभ्यंतर विराट और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री तुलसी

● मुनि कमल कुमार ●

आचार्य श्री तुलसी का बाह्याभ्यंतर विराट और आकर्षक व्यक्तित्व था। गौरवर्ण, विशाल भाल, प्याले जैसी स्नेहिल आंखें, लंबे-लंबे कान और कानों पर काले-काले बाल, सुरीला कंठ, हाथ-पैरों की सुंदर आकृति, मधुर और तत्त्व भरी वाणी शरणागत को मंत्रमुग्ध कर देती। आंतरिक व्यक्तित्व इससे भी उच्च स्तर का था। समिति, गुप्ति की जागरूकता, योगों की स्थिरता, लक्ष्य के प्रति सर्वात्मना समर्पित, आचारनिष्ठ, अनुशासनप्रिय, अध्यात्म से ओतप्रोत, दूरदर्शी चिंतन, स्व-पर कल्याण में तत्पर, अनाग्रह वृत्ति के धनी थे आचार्य श्री तुलसी।

मात्र 10 वर्ष की अवस्था में तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य परम पूज्य कालूगणी से दीक्षित, शिक्षित, विकसित हुए। मात्र 22 वर्ष की अवस्था में पूज्य कालूगणी ने अपना उत्तराधिकारी बनाकर तेरापंथ धर्मसंघ को दीर्घजीवी और आधुनिक बना दिया। गुरुदेव तुलसी मात्र तीन दिन ही युवाचार्य रहे। तीज के दिन आपको चार तीर्थ के मध्य युवाचार्य बनाया गया और छठ के दिन पूज्य कालूगणी का संथारा पूर्वक देवलोक गमन हो गया। आचार्य के देवलोक होते ही युवाचार्य, आचार्य बन जाते हैं। गुरुदेव तुलसी तीन दिन पूर्व युवाचार्य बने और तीन दिन बाद विधिवत आचार्य पद पर, अर्थात भाद्रव शुक्ला नवमी को, प्रतिष्ठित हुए। तेरापंथ धर्मसंघ में सबसे छोटी अवस्था में आचार्य श्री तुलसी ही आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए।

आपका हर दूरदर्शी सपना तेरापंथ को गतिमान बनाने वाला सिद्ध हुआ। आचार्य श्री तुलसी से पूर्व साध्वियों का अध्ययन नाममात्र ही कहा जा सकता था। आज जो साध्वियों का हर क्षेत्र में विकास देख रहे हैं, यह आचार्य श्री तुलसी की ही देन कह सकते हैं। महिला मंडल, युवक परिषद्, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, समण श्रेणी — सब आचार्य तुलसी की ही देन हैं।

आगम साहित्य, अणुव्रत साहित्य, प्रेक्षाध्यान साहित्य, जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम, गद्य साहित्य, पद्य साहित्य, विविध भाषाओं में आधुनिक शैली में प्रांजल साहित्य जो आज हम देख रहे हैं — यह सब आचार्य तुलसी की महान देन है।

साहित्य के कारण ही जैन-अजैन आज तेरापंथ को बड़ी श्रद्धा से निहार रहे हैं। जैन विश्व भारती के कारण कितने-कितने बौद्धिक लोगों से सहज जुड़ना हो रहा है। दिगंबर-श्वेतांबर समाज के लिए अध्ययन का एक विश्वसनीय केंद्र बना है। अनेक विदेशी लोग जैनत्त्व, तेरापंथ तत्त्व को आसानी से समझ सकते हैं। प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, जीवन विज्ञान को जैनों से ज्यादा अजैनों ने अपनाकर सात्विक, स्वच्छ और आनंदमय जीवन बनाया है।

तेरापंथ धर्मसंघ में सबसे बड़ा आचार्यकाल आपका ही रहा है। आपने पंजाब से कन्याकुमारी, राजस्थान से कोलकाता तक की पैदल यात्राएं करके मानव धर्म का जो प्रचार किया है, उसे युग नहीं, शताब्दियों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता। वर्तमान के पदालिप्सु युग में हर तरह से सक्षम होते हुए भी आचार्य पद का विसर्जन कर आपने स्वर्णिम इतिहास बना दिया। आपकी ही दूरदर्शिता से हमें अप्रमत्त अध्यात्म योगी, उन्नत विचारक, मृदु अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का कुशल मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। आपकी सूझ-बूझ से ही यह तेरापंथ जन-जन का पंथ बन पाया है।

आज मेरे शिक्षाप्रदाता, दीक्षाप्रदाता के पुण्य दिवस पर श्रद्धा भरा हार्दिक नमन करता हूं और यह मंगल कामना करता हूं कि अंतिम श्वास तक धर्मसंघ की सेवा करता रहूं।

# कन्या मंडल द्वारा टॉक शो का आयोजन

**हैदराबाद।**

तेरापंथ कन्या मंडल, हैदराबाद द्वारा मानसरोवर हाइट्स, तिरुमलगिरि में डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में एक टॉक शो का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या सह-प्रभारी रेखा संकलेचा द्वारा स्वागत भाषण से हुआ, वहीं वक्ता का परिचय कन्या मंडल की सह-संयोजिका सुरभि बोथरा ने दिया।

डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी ने 'जड़ों की ओर वापसी', 'हमें सामाजिक क्यों होना चाहिए' और 'सपनों को वास्तविकता में बदलने हेतु लक्ष्य निर्धारण की शक्ति' जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहराई से विचार रखे। उन्होंने आज की नवपीढ़ी को धर्म से जुड़े रहने के सरल और व्यवहारिक उपाय अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता परामर्श मनोवैज्ञानिक रुचि सेठिया रहीं। उन्होंने उक्त तीनों विषयों को प्रभावशाली कथाओं और संवादों के माध्यम से उपस्थित कन्याओं को सहज रूप में समझाया। उन्होंने कहा कि हमारे संस्कार बंधन नहीं, बल्कि मार्गदर्शक होते हैं, जो हमें एक स्वस्थ एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

मुख्य वक्ता रुचि सेठिया का सम्मान महिला मंडल की मंत्री सुशीला मोदी एवं कन्या सह-प्रभारी रेखा संकलेचा द्वारा साहित्य भेंट एवं दुपट्टा प्रदान कर किया गया।

इस अवसर पर महिला मंडल, कन्या मंडल की अनेक पदाधिकारीगण, गणमान्य व्यक्तित्व एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। उपस्थितजनों ने मुख्य वक्ता द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर उत्साहपूर्वक दिए, जिससे कार्यक्रम और भी रोचक बन गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन सह-संयोजिका सुरभि बोथरा द्वारा किया गया एवं आभार प्रदर्शन रेखा संकलेचा ने किया।

# "मातृ-पितृ देवो भव" कार्यक्रम का हुआ भव्य आयोजन

**जसोल।**

तेरापंथी सभा के तत्वावधान में ओसवाल भवन के विशाल प्रांगण में ₹मातृ-पितृ देवो भव₹ कार्यक्रम का भव्य आयोजन साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में समाजजनों की विशाल उपस्थिति देखने को मिली।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने संबोधन में माँ की महिमा का भावपूर्ण वर्णन करते हुए कहा, "माँ करुणा का मंगलकलश है, ममता का महाकाव्य है। इस धरती पर माँ जैसा कोई नहीं, जो लातें खाकर भी दूध पिलाए। एक समय था जब माँ थाली हाथ में लेकर बेटे के पीछे-पीछे घूमती थी, आज वही माँ बेटे के हाथ से निवाला पाने को तरस रही है। माँ ब्रह्मा है क्योंकि वह सृजन करती है, विष्णु है क्योंकि पालन करती है, और महेश है क्योंकि बुरे संस्कारों का नाश करती है।" उन्होंने भगवान महावीर के ठाणं सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि माँ-बाप का ऋण चुकाना संभव नहीं, लेकिन उनका सम्मान और सेवा करके हम अपने कर्तव्य की पूर्ति कर सकते हैं।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने पिता के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, "माता-पिता जीवन का प्रथम रिश्ता है, उसके बाद ही अन्य रिश्तों का सिलसिला प्रारम्भ होता है। पिता रोटी, कपड़ा, मकान है, छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है। पिता द्वारा दी हुयी नसीहत को संभलकर रखें तो आपका जीवन शानदार व चमकदार बन जाएगा। कार्यक्रम में साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कविता के माध्यम से माँ की ममता का सुंदर गुणगान किया।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंगल संगान प्रस्तुत किया, जबकि मंच संचालन साध्वी समत्वयशाजी ने किया।

# मंगल भावना समारोह का आयोजन

**नोखा।**

डॉ. मुनि अमृत कुमार जी के 27 दिवसीय प्रवास की सम्पन्नता पर मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया।मुनिश्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि, "27 दिन के प्रवास में नोखा के युवक, कन्या, ज्ञानार्थी व श्रावक-श्राविका समाज ने धर्म ध्यान का पूरा लाभ लिया। स्वच्छ, शांत नोखा अनोखा क्षेत्र है। यहां 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी लंबे समय से विराजित हैं। आप लोग आलस्य-प्रमाद त्याग कर पूरा-पूरा धार्मिक लाभ उठाएं ।

मुनि उपशम कुमार जी ने अपनी जन्मभूमि नोखा को उपजाऊ भूमि व धार्मिकता से ओतः प्रोत बताया।

महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। सभा अध्यक्ष शुभकरण चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, कवि इंदरचंद बैद, हंसराज भूरा, उपासक अनुराग बैद, सुशील भूरा, रामलाल बैद ने मुनिश्री के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

# स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

**सिरियारी।**

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी द्वारा संचालित आचार्य श्री भिक्षु अस्पताल में मधुमेह (डायबिटीज), हृदय रोग, दमा रोग एवं थायरॉयड जैसी बीमारियों के निवारणार्थ एक दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में जोधपुर से पधारे वरिष्ठ चिकित्सा विशेषज्ञों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। संस्थान के अध्यक्ष निर्मल एम. जैन श्रीश्रीमाल के नेतृत्व में इस शिविर का आयोजन किया गया।

आसपास के क्षेत्रों से, जो सिरियारी से 40 से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं, बड़ी संख्या में मरीज चिकित्सा हेतु पहुंचे।

शिविर में लाभान्वित हुए सभी रोगियों ने संस्थान अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त की और भविष्य में भी इस प्रकार के विशेषज्ञ चिकित्सा शिविरों के आयोजन का निवेदन किया।

## संक्षिप्त खबर

# कषाय ले जाते हैं आत्मा को मोक्ष से दूर

**कानपुर।** साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में ₹ANGER is DANGER₹ विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। इसके पश्चात महिला मंडल की बहनों ने कार्यशाला के महत्व को दर्शाती एक गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत लघु नाटक रहा। इस नाटक के माध्यम से चार कषाय — क्रोध, मान, माया और लोभ — से होने वाली हानि का सजीव चित्रण महिला मंडल की बहनों ज्योति भुतोडिया, तनीषा बुच्चा, शालिनी बुच्चा, अंशु जम्मड, शिल्पा बैद एवं विनीता सेठिया ने किया। साध्वी स्वर्णरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि कषाय आत्मा को मोक्ष से दूर ले जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति के लिए इनका त्याग आवश्यक है। उन्होंने कषाय से मुक्त होने के लिए ध्यान, तपस्या, आत्म-जागरूकता, अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह जैसे मार्गों की विस्तृत व्याख्या की। कार्यक्रम का संचालन सभा के पूर्व मंत्री संदीप जम्मड ने कुशलता से किया।

# जीवन वृत्त पर नाटिका का मंचन

**नोखा।** डॉ. मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा मुनि आषाढ़भूति के जीवन वृत्त पर नाटिका का मंचन नाहटा भवन में किया गया। मुनि अमृत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि, "व्यक्ति को अपने जीवन में संयम रखना चाहिए। संयम जीवन के विकास का सबसे बड़ा माध्यम है।" मुनि उपशम कुमार जी ने बताया कि, "व्यक्ति को जीवन में हमेशा गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए, गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए एवं हर तरह के नशे से दूर रहना चाहिए।" ज्ञानशाला के बच्चों ने मुनि आषाढ़भूति के जीवन वृत्त के नाटक का मंचन करते हुए गुरु की शिक्षा एवं गुरु के समक्ष की हुई प्रतिज्ञा का महत्व समझाया। बच्चों को नाटिका का मंचन करवाने के लिए ज्ञानशाला प्रशिक्षिका राजकुमारी मरोठी, धारा लुणावत, रेखा सेठिया एवं भावना मरोठी, नम्रता सखलेचा, लक्षिता लुणावत, ललित बैद, कार्तिक नाहटा, हर्षीत भूरा, राज मरोठी ने अथक परिश्रम किया। मुख्य अतिथि पीलीबंगा की पूर्व विधायक द्रौपदी मेघवाल, सुमन मरोठी, प्रीति मरोठी, ज्ञानशाला के प्रभारी महावीर नाहटा, तेरापंथ सभा के मंत्री मनोज घीया, निर्मल चोपड़ा ने पारितोषिक वितरण किया। तेयुप मंत्री सुरेश बोथरा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन धारा लुणावत एवं रेखा सेठिया ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक श्राविका उपस्थित रहे।

# संस्कार निर्माण शिविर समायोजित

**टी दासरहल्ली।** साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, टी. दासरहल्ली में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मंगल मंत्रोच्चार से हुई। साध्वी सोमयशा जी ने प्रसंगों, कहानियों तथा प्रश्नोत्तर के माध्यम से बच्चों को समझाया कि संस्कार जीवन के लिए आवश्यक हैं तथा अच्छे संस्कारों को ग्रहण करने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने बच्चों को योगासन के लाभों से अवगत कराया और प्रतिदिन योग करने की प्रेरणा दी। असम से समागत योग प्रशिक्षिका सारीका खेतान ने बच्चों को योग का प्रशिक्षण प्रदान किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं गीता बाबेल, दीपिका गांधी, सुनीता भटेवरा और डिंपल चावत की उपस्थिति रही। सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने सभी का स्वागत करते हुए साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। महिला मंडल अध्यक्षा नेहा चावत ने अपनी भावना प्रकट की। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका डिंपल चावत ने किया।

## संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
## जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

### नामकरण संस्कार

■ **गांधीनगर, दिल्ली।** चान्दारुण निवासी बैंगलोर प्रवासी बबीता देवी - जीवनमल कोठारी की सुपौत्री व खुशबू - मयंक कोठारी की सुपुत्री का नामकरण ननिहाल में जैन संस्कार विधि से संस्कारकगण प्रकाश सुराणा, राकेश पुगलिया ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

### नूतन प्रतिष्ठान

■ **अमराईवाडी ओढव।** अहमदाबाद प्रवासी ओम प्रकाश सिंघवी के प्रतिष्ठान Agarbattiwale.com का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। ह्री संस्कारक दिनेश टुकलिया एवं पंकज डांगी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि परिसम्पन्न करवाई।

■ **गांधीनगर, दिल्ली।** गंगाशहर निवासी दिल्ली प्रवासी ममता सुराणा के नूतन प्रतिष्ठान SMODRI STUDIO का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व महेंद्र कुमार श्यामसुखा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **हुबली।** रतन, पीयूष, अक्षय बागरेचा के नए व्यापारिक अनुष्ठान का शुभारंभ कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक केसरीचंद गोलछा एवं कुशल वडेरा ने संपन्न कराया।

■ **भीलवाड़ा।** ईश्वरलाल, प्रकाश, पुनीत कावड़िया के नूतन परिसर स्टाइलो हाउस का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अशोक सिंघवी एवं प्रकाश कावड़िया द्वारा करवाया गया।

### नूतन गृह प्रवेश

■ **राजराजेश्वरीनगर।** चूरू निवासी बैंगलोर प्रवासी सरोज कोठारी के पुत्र सुनीत भावना कोठारी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उनके निवास स्थान में संस्कारक विकास बांठिया एवं पवन बैद ने सम्पन करवाया।

■ **साउथ कोलकाता।** सुरेंद्र दूगड़ का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उनके नवीन निवास स्थान में जैन संस्कारक महावीर दूगड़ एवं सह संस्कारक रोहित दूगड़ ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** महेन्द्र - पिंकी पारख के नूतन गृह प्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक कन्हैयालाल बोथरा, धर्मेन्द्र डाकलिया और विनीत बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मंगल मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **उदयपुर।** पदराडा निवासी, सूरत प्रवासी अशोक बाफना का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से पदराडा गांव में किया गया। तेयुप उदयपुर से जैन संस्कारक पंकज भंडारी ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए पूर्ण विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

■ **हुबली।** गौतमचंद महावीर जितेन्द्र बागरेचा परिवार का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक केसरीचंद गोलछा और कुशल वडेरा ने कुशलता पूर्वक संपन्न किया।

### भूमिपूजन एवं शिलान्यास समारोह

■ **शिरपुर।** संस्था शिरोमणि तेरापंथी महासभा के भवन निर्माण योजना के अंतर्गत तेरापंथ भवन शिरपुर (खान्देश) का जैन संस्कार विधि से भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।

# वर्षीतप तपोभिनंदन समारोह समायोजित

**चेन्नई।**

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उत्तर चेन्नै के तत्वावधान में तेरापंथ भवन टन्डियारपेट में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य मे वर्षीतप तपोभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र समुच्चारण के बाद कार्यक्रम की शुरुआत मंजु दक के द्वारा मंगलाचरण से हुई।

उत्तर चेन्नई सभा के अध्यक्ष इन्दरचन्द डूंगरवाल ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए तपस्वियों के तप की अनुमोदना की। तण्डियारपेट ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी पूनमचन्द जैन ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। मुनि दीपकुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि तपस्या से कर्म निर्जरा होती है। अभिग्रह सहित तपस्या के महत्व पर प्रकाश डालते हुए साध्वी पन्नाजी के अभिग्रह फलित घटना पर प्रकाश डालते हुए इसका महत्व बताया और सभी तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए मंगलकामनाएँ संप्रेषित की।

वर्षीतप तपस्वियों शांता बाफना, सौभाग्यवती चौपड़ा, विमलादेवी मांडोत, शोभाबाई खीवेसरा, संगीता भरसारिया का तपोभिनंदन पत्र से सम्मान किया गया। तपस्वियों के परिवार वालों ने अपने भावों से तप अनुमोदना की। स्थानीय बहनों ने गीतिका के द्वारा तप अनुमोदना की। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष कमलेश बाफणा ने किया।

धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष दिलीप गेलडा ने दिया। इस अवसर पर महासभा आंचलिक प्रभारी विमल चिप्पड, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा सहित उत्तर चेन्नै के प्रभारीगण एवम श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 जून - 08 जून, 2025

## संबोधि

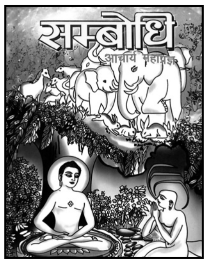


### गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

५८. कारुण्येन भयेनापि, संग्रहेणानुकम्पया।
लज्जया चापि गर्वेण, अधर्मस्य च पोषकम्॥
५९. धर्मस्य पोषकं चापि, कृतमितिधिया भवेत्।
करिष्यतीति बुद्ध्यापि, दानं दशविधं भवेत्॥
(युग्मम्)

दान दस प्रकार का होता है-

1. **अनुकंपा दान**– किसी व्यक्ति की दीनावस्था से द्रवित होकर उसके भरण-पोषण के लिए दिया जाने वाला दान।
2. **संग्रह**– दान कष्ट में सहायता देने के लिए दान देना।
3. **भय**– दान-भय से दान देना।
4. **कारुण्य-दान**– शोक के प्रसंग में दान देना।
5. **लज्जा-दान**– लज्जा से दान देना।
6. **गर्व-दान**– यशोगान सुनकर एवं बराबरी की भावना से दान देना।
7. **अधर्म-दान**– हिंसा आदि पांच आस्रव-द्वार सेवन के लिए दान देना।
8. **धर्म-दान**– प्राणी मात्र को अभय, संयमी को विशुद्ध भिक्षा, किसी को ज्ञान, सम्यक्त्व और चारित्र की प्राप्ति करवाना।
9. **करिष्यति**– दान-लाभ के बदले की भावना से दान देना।
10. **कृत-दान**– किये हुए उपकार को याद कर दान देना।

दान शब्द का अर्थ है-देना, छोड़ना, विसर्जन करना। दान को चार प्रकार के धर्मों में एक धर्म कहा है। मनुष्य की प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे एक भाव रहता है। प्रवृत्ति मुख्य नहीं होती, भाव मुख्य होता है। समान्यतया मनुष्य प्रत्येक क्रिया के पूर्व यह क्यों करनी चाहिए? क्या फल है? इसे जान लेना चाहेगा। फलाकांक्षा का त्याग साधारण बात नहीं। गीता का सार है-त्याग, फलाकांक्षा छोड़ देना। 'राबिया' एक सूफी साधिका थी। वह एक हाथ में मशाल और एक हाथ मैं पानी की बाल्टी लेकर भागी जा रही थी। लोगों ने पूछा-आज क्या मामला है? 'राबिया' ने कहा-स्वर्ग को जलाने और नरक को डुबोने जा रही हूं।

(क्रमशः)

## श्रमण महावीर

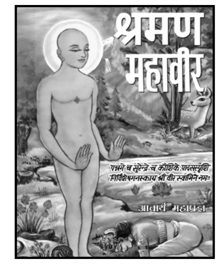


### संघातीत साधना

भगवान् ने साधकों को तीन श्रेणियों में विभक्त कर दिया-

१. प्रत्येक बुद्ध-प्रारम्भ से ही संघ-मुक्त साधना करने वाले।

२. स्थविरकल्पी-संघबद्ध साधना करने वाले।

३. जिनकल्पी-संघ से मुक्त होकर साधना करने वाले।

**यह श्रेणी-विभाग भगवान् पार्श्व के समय में भी उपलब्ध होता है। संघ साधना का स्थायी केन्द्र था। अकेले रहकर साधना करने वाले साधकों को उस (साधना) की अनुमति मिल जाती। वे साधना पूर्ण कर फिर संघ में आना चाहते तो आ सकते थे। भगवान् महावीर की दृष्टि संघ से बंधी हुई नहीं थी। उसका अनुबंध साधना के साथ था। साधक का लक्ष्य साधना को विकसित करना है, फिर वह संघ में रहकर करे या अकेले में। साधना शून्य होकर अकेले में रहना भी अच्छा नहीं है और संघ में रहना भी अच्छा नहीं है। संघ को प्रधान मानने वाले व्यक्ति अपने द्वार को खुला नहीं रख सकते। जो अपने संघ के भीतर आ गया, उसके लिए बाहर जाने का द्वार बन्द रहता है और जो बाहर चला गया, उसके लिए भीतर आने का द्वार बन्द रहता है। भगवान् महावीर ने आने और जाने के दोनों द्वार खुले रखे। साधना के लिए कोई भीतर आए तो आने का द्वार खुला है और साधना के लिए कोई बाहर जाए तो जाने का द्वार खुला है।**

संघबद्ध और संघमुक्त साधकों की मर्यादाएं भिन्न-भिन्न थीं। संघबद्ध साधक परस्पर सहयोग करते थे। संघमुक्त साधक निरालम्व जीवन जीते थे। जीवन-व्यवहार में अनुशासन और एकरूपता-ये संघ की विशेषताएं हैं।

भगवान् महावीर सिंधु-सौवीर की ओर जा रहे थे। गर्मी का मौसम था। मार्ग में गांव कम, जल कम और आवागमन बहुत कम। चारों ओर बालू के टीले ही टीले भूखे-प्यासे साधु भगवान् के साथ चल रहे थे। उस समय कुछ बैलगाड़ियां मिलीं उनमें तिल लदे हुए थे। उनके मालिकों ने साधु-संघ को देखा और देखा कि साधु भूख से आकुल हो रहे हैं। वे बोले- 'महाराज! आप तिल खाकर भूख को शांत करें।' तिल निर्जीव थे। फिर भी भगवान् ने तिल खाने की अनुमति नहीं दी। तिल लेने की परम्परा का सूत्रपात एक बार हो गया तो सदा के लिए हो गया। फिर तिल लेने का संस्कार बन जाएगा, सजीव या निर्जीव की बात पीछे रह जाएगी। हर साधु कैसे जान पाएगा कि तिल सजीव हैं या निर्जीव?

**भगवान् का काफिला कुछ आगे बढ़ा। मार्ग से थोड़ी दूर पर एक जलाशय दिखाई दिया। प्यास से आकुल साधु बोल उठे- 'वह पानी दिख रहा है।' भगवान् ने अपने प्रत्यक्ष ज्ञान से देखा जलाशय का जल निर्जीव है। इसे पीने में कोई हिंसा नहीं होगी पर इसे पीना उचित कैसे होगा? एक बार जलाशय का जल पी लिया, फिर दूसरी बार वह वर्जित कैसे होगा? हर साधु कैसे जान पाएगा कि जल सजीव है या निर्जीव? भगवान् ने जलाशय का जल पीने की अनुमति नहीं दी।**

उस मार्ग में भगवान् के अनेक साधु दिवंगत हो गए पर उन्होंने संघीय व्यवस्था का अतिक्रमण नहीं किया।

संघीय जीवन में अनुसरण की बात पर बहुत ध्यान देना होता है। एकाकी जीवन में धर्म की चिन्ता होती है, अनुसरण की चिन्ता नहीं होती। भगवान् महावीर के संघ से मुक्त होकर एकाकी साधना करने वाले सैकड़ों-सैकड़ों मुनि थे।

भगवान् ने संघ को बहुत श्रेष्ठता प्रदान की, इसीलिए अधिकांश साधकों ने संघ में रहना पंसद किया। उस समय कुछ धर्मावलम्बी संघ का विरोध भी करते थे।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

### आचार्यश्री रायचंद जी युग

#### साध्वीश्री मगदूजी छोटा (आमेट) दीक्षा क्रमांक 102

साध्वीश्री आचार-विचार में कुशल, हृदय से सरल, निर्मल, उपशान्त कषाय और साता कारिणी थी। साध्वीश्री तपस्विनी साध्वी थीं। आपने बहुत दिनों तक एकान्तर तप किया। उपवास से लेकर 10 दिन की तपस्या अनेक बार की तथा 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 22/1, 30/1, 34/1, 40/1, 54/1 किया।

शीतकाल में शीत परिषह बहुत सहन किया। आजीवन दो पछेवड़ी से अधिक नहीं ओढ़ी। अन्त में लगभग सवा मुहूर्त्त के अनशन से आपका स्वर्ग प्रस्थान हो गया।

– साभार: शासन समुद्र –

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

## धर्म है उत्कृष्ट मंगल

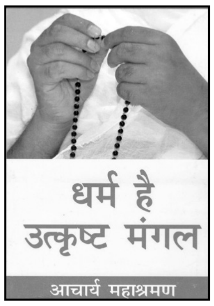


**-आचार्यश्री महाश्रमण**

# साधना की निष्पत्ति : वीतरागता

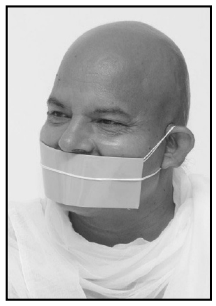

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र का एक श्लोक है जो विशुद्ध वीतरागता का दर्शन कराता है-

**भव बीजांकुरजनना रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य।**
**ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै।।**

जन्म-श्रृंखला के कारणभूत राग आदि जिसके क्षीण हो गए हैं उस आत्मा को नमस्कार है फिर नाम से वह चाहे ब्रह्मा हो, विष्णु हो, शिव हो, जिन हो-कोई भी हो।

**अध्यात्म-साधना का लक्ष्य है वीतरागता। वीतरागता की साधना में बाधाएं भी उत्पन्न होती रहती हैं। उनका उत्पादक है मोहकर्म। जब-जब मोह का उदय प्रबल होता है, वीतरागता के विकास में अवरोध ही नहीं, गतिरोध ही नहीं, प्रतिगति और ह्रासोन्मुखता भी हो जाती है। ज्यों-ज्यों मोह का विलय (क्षयोपशम, उपशम, क्षय) प्रबल होता है, व्यक्ति वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ता जाता है। मोह विलय के उपायों को जानना अपेक्षित है, आलम्बन अपेक्षित है।**

भगवान महावीर समता-पुरुष थे, उनकी समता की पराकाष्ठा इस श्लोक से ज्ञात होती है-

**पन्नगे च सुरेन्द्रे च, कौशिके पादसंस्पृशि।**
**निर्विशेषमनस्काय श्री वीरस्वामिने नमः।।**

भगवान महावीर को नमस्कार। वे महावीर जो समचित्त थे। चण्डकौशिक सर्प ने प्रभु के चरण का स्पर्श किया, पैर को दंशा और देवेन्द्र ने भी प्रभु के चरणों में नमस्कार किया। एक भयंकर प्रतिकूलता की स्थिति और एक इति सुखद अनुकूलता की स्थिति। ऐसी प्रतिकूलता-अनुकूलता की स्थितियों को जिन्होंने समभाव से सहन किया, उन भगवान महावीर को नमस्कार।

तन्मयता से भगवान महावीर जैसे महापुरुषों का पुनः पुनः स्मरण भी वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने में सहायक बनता है।

राजा ने संन्यासी से शांति का मार्ग बताने के लिए कहा। सन्त ने कहा-शांति का मार्ग है समता-सुख-दुःख में सन्तुलित मानसिकता। भगवन्! इसको साधने के लिए कोई आलम्बन-सूत्र भी दो। संन्यासी ने कहा- 'यह समय भी बीत जाएगा' इस कथ्य को याद रखो। अनुकूलता की स्थिति में इसका स्मरण करो और प्रतिकूलता की स्थिति में भी इसका स्मरण करो, प्रियता और अप्रियता के भावों से बचने का प्रयास करो।

मुक्त आत्मा पूर्णतया विशुद्ध है। संसारी आत्मा पूर्ण विशुद्ध नहीं होती। ज्यों-ज्यों आध्यात्मिक विकास होता है, जीव पूर्ण विशुद्धि की दिशा में गतिमान् होता है। पूर्ण विशुद्धि (सिद्धावस्था) की प्राप्ति के पूर्व केवलज्ञान की उपलब्धि आवश्यक है। सब केवलज्ञानी तीर्थंकर नहीं होते। उनमें से कुछ जीव ही तीर्थंकरत्व को प्राप्त होते हैं। भगवान महावीर के समय यहां केवली मुनि सैकड़ों थे, परन्तु तीर्थंकर एकमात्र भगवान महावीर थे। तीर्थंकरत्व प्रकृष्ट पुण्य प्रकृति के उदय से प्राप्त होता है। श्रमण भगवान महावीर के तीर्थ में नौ जीवों ने तीर्थंकर नाम गौत्र कर्म अर्जित किया था। ठाणं में उसका वर्णन प्राप्त है।

वीतरागता की साधना कषाय-विजय की साधना है। एक शब्द में कषाय, दो शब्दों में राग और द्वेष, चार शब्दों में क्रोध, मान, माया और लोभ को जीतना मोहविजय और वीतरागता है। वीत का अर्थ है- चला गया-खत्म हो गया। राग का अर्थ है- आसक्तिपरक परिणाम। साधना के क्रमिक विकास में सबसे अन्त में राग खत्म होता है, क्रोध आदि तो पहले ही उपशांत अथवा क्षीण हो जाते हैं। इसलिए जिसके राग नहीं रहता, उसके अन्य कषाय भी नहीं रहता, वह पूर्ण वीतराग बन जाता है।

दो शिष्य गुरु के पास पहुंचे। साधना के लिए मार्गदर्शन की प्रार्थना की। गुरु ने सूत्रशैली में कहा- 'मा रुष, मा तुष' प्रतिकूलता की स्थिति में रोष मत करो और अनुकूलता की स्थिति में हर्ष मत करो। दोनों स्थितियों में सम रहो। यही जीवन की साधना है। पाप कर्म के बन्ध का अनन्य कारण है राग और द्वेष। जिस प्रवृत्ति के साथ राग-द्वेष जुड़ जाता है, वह बन्धन का हेतु बन जाती है, अशुभ योग की संज्ञा को प्राप्त हो जाती है। जो प्रवृत्ति राग-द्वेष मुक्त रहती है वह निर्जरा का हेतु बन जाती है, शुभ योग की संज्ञा को प्राप्त हो जाती है। वह वीतराग का मार्ग है।

(क्रमशः)

## संघीय समाचारों का मुखपत्र

**तेरापंथ टाइम्स**
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

**समाचार प्रकाशन हेतु**
**abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा**
**8905995002 पर व्हाट्सअप करें।**

**अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्**

## जून 2025
## सप्ताह के विशेष दिन

| | |
|---|---|
| **09 जून**<br>भगवान सुपार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक | **10 जून**<br>पक्खी |
| **14 जून**<br>29वां आचार्यश्री तुलसी महाप्रयाण दिवस | **15 जून**<br>भगवान ऋषभ च्यवन कल्याणक |

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

### आचार्यश्री कालूरामजी युग

### मुनिश्री हजारीमलजी (श्री डूंगरगढ़) दीक्षा क्रमांक 360

मुनिश्री प्रकृति से सरल, शांत और बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास से नौ दिन तक क्रमबद्ध तप किया। सं 1978 एकान्तर तप चालू किया जो 21 वर्षों तक निरन्तर चला। आपके तप की तालिका इस प्रकार है– उपवास/3563, 2/111, 3/17, 4/7, 5/10, 6/2, 7/1, 8/1, 9/1। कुल तप दिन 3950, जिनके 10 वर्ष 11 महीने और 20 दिन होते हैं।

**– साभारः शासन समुद्र –**

# अक्षय तृतीया पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

## बलवाड़ा (मध्यप्रदेश)

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा इंदौर द्वारा सरस्वती शिशु मंदिर बलवाड़ा में अक्षय तृतीया का तप अभिनंदन समारोह मुनि अर्हत् कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मुनिश्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सभी अपने चिंतन को बदलने की ओर अग्रसर हों। आप सभी अपनी सोच को सकारात्मक रखें, सकारात्मक सोच से ही सब काम सफल होते हैं। इंदौर तेरापंथ समाज कंधे से कंधे मिला कर समाज में ऐसा नव निर्माण करे जिससे परम पावन आचार्य श्री महाश्रमणजी के स्मृति पटल पर ऐसी छाप छोड़ें कि गुरुदेव सन् 2031 का चतुर्मास इंदौर में करने की घोषणा करें। मुनिश्री ने कहा कि भगवान ऋषभ ने असि, मसि, कृषि के माध्यम से समाज में नई प्रेरणा दी। अक्षय तृतीया वह पर्व है जिसमें कहीं कभी क्षय नहीं है। भगवान ऋषभ प्रथम योगी, प्रथम मुनि, प्रथम तीर्थंकर थे। आपने भगवान ऋषभ के जीवन पर आधारित गीतिका के माध्यम से उनके जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात वर्षीतप तपस्चर्या में रत कमल सुराना, सुखराज देवी सुराना, विनीता पुगलिया के प्रति आध्यात्मिक मंगल भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आप तप के समरांगण में और अधिक तत्पर रहते हुए अपना आत्म कल्याण करें। मुनि भरत कुमार जी और मुनि जयदीप कुमार जी ने चतुर्मास को सफल बनाने के लिए प्रेरित किया। महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका का संगान किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा इंदौर के अध्यक्ष निर्मल नाहटा, पूर्व कार्याध्यक्ष विजय सिंह सुराना ने अपने विचार व्यक्त करते किए। कांठमांडू से समागत प्रियंका कोठारी गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। तप अभिनन्दन पत्र का वाचन तेरापंथ सभा मंत्री राकेश भंडारी ने किया। सभा द्वारा वर्षीतप तपस्वियों का सम्मान किया गया। संचालन एवं आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के मंत्री राकेश भंडारी ने किया।

## राजलदेसर

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर कांता जैन गुलगुलिया के द्वितीय वर्षीतप का अभिनंदन किया गया। साध्वी वृंद द्वारा मंगलाचरण से शुरू हुए कार्यक्रम में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने तप अनुमोदना करते हुए कहा - भगवान ऋषभ का कर्तृत्व व व्यक्तित्व अपने आप में अनुपम है। ऋषभ इस पृथ्वी के प्रथम राजा बनकर इस सृष्टि के व्यवस्था सूत्र के प्रथम सूत्रधार थे। सम्राट से सन्यस्त हुए और संयम जीवन स्वीकार किया। उस समय के लोग सीधे सरल थे। बैलों का मुंह 12 घंटे बंधे रहने के कारण भगवान ऋषभ को 12 महीने तक भिक्षा नहीं मिली। लंबी तपस्या हो गई। लोग भिक्षा विधि से अनजान थे। प्रपौत्र श्रेयांस ने जाति स्मरण ज्ञान से सब जाना और इक्षुरस का सुपात्र दान देकर ऋषभ भगवान का पारणा करवाया। वह दिन था वैशाख शुक्ला तृतीया और वह अक्षय तृतीया बन गई। अक्षय तृतीया का यह पर्व हमें सुपात्र दान देने की प्रेरणा देता है जिसे देकर हम भव परंपरा से मुक्त हो सकते हैं। सचमुच ऋषभ सभ्यता और संस्कृति के विकास पुरुष थे। वर्षीतप करने से इंद्रिय संयम के साथ-साथ अनासक्त चेतना का विकास होता है। वर्षीतप की अनुमोदना करते हुए साध्वीश्री जी ने श्रावक-श्राविकाओं को वर्षीतप करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों और कन्या मंडल ने 'सबसे श्रेष्ठ जैन धर्म' नाटिका की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वी कीर्तिरेखा जी, साध्वी वृंद, महिला मंडल, मोनिका बैद, मंजू दुगड़, प्रेमरतन पांडे ने सारगर्भित वक्तव्य और गीतों के माध्यम से भगवान ऋषभ का गुणगान किया। वर्षीतप करने वाली बहन कांता का तेरापंथ सभा व महिला मंडल द्वारा अभिनंदन किया गया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री कमल दुगड़ ने किया। साध्वी इंदुयशा जी ने कार्यक्रम का कुशल संयोजन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

## सिन्धीकेला

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी निर्देशिका डॉ. ज्योति प्रज्ञा जी के सान्निध्य में सिन्धीकेला स्थित अग्रवाल जैन तेरापंथ भवन में अक्षय तृतीया के अवसर पर वर्षीतप तपस्विनी मेमदेवी के पारणा समारोह का आयोजन संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान ऋषभदेव की परंपरा आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। वैशाख शुक्ला तृतीया तिथि तप और दान धर्म का प्रतीक है। उन्होंने वर्षीतप की 19वीं बार पूर्णता को विशेष उपलब्धि बताया। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में टिटिलागढ़ विधायक नवीन जैन, मुख्य वक्ता के रूप में ओडिशा प्रांत के वरिष्ठ श्रावक एवं साहित्यकार तुलसीराम जैन, तथा सम्मानित अतिथि के रूप में प्रांतीय सभा अध्यक्ष मनोज जैन एवं कमिश्नर सारिका जैन उपस्थित रहे। महासभा के आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में विविध आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी गईं। केसिंगा से आई नमिता जैन एवं नीलम जैन ने वर्षीतप पर सास-बहू के रूप में हरियाणवी भाषा में हास्य मंचन किया। केसिंगा कन्या मंडल द्वारा "अक्षय तृतीया – एक, रहस्य अनेक" शीर्षक पर विशेष प्रस्तुति दी गई। ऋषभदेव प्रभु की अयोध्या नगरी एवं वर्षीतप पारणे पर आधारित गीतों पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किए गए। साथ ही छह बच्चों ने आमाशय, जीभ, लिवर, आंतों एवं मस्तिष्क के रूप में शिक्षाप्रद संवाद प्रस्तुत किया, जो विशेष सराहना का केंद्र रहा। उपस्थित सभी अतिथियों एवं तपस्विनी मेमदेवी को स्थानीय एवं प्रांतीय सभा द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन समणी डॉ. मानस प्रज्ञा जी द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष रामअवतार जैन ने स्वागत भाषण एवं नवीन जैन ने आभार प्रदर्शन किया।

## साहूकारपेट, चेन्नई

मुनि मोहजीत कुमारजी ठाणा 3 एवं मुनि दीपकुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ जैन विद्यालय, साहूकारपेट परिसर में अक्षय तृतीया पारणोत्सव का शुभारंभ महामंत्रोच्चार व "ॐ ऋषभाय नमः" जप के साथ हुआ।

इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने भगवान ऋषभदेव द्वारा विकास की परंपरा एवं वर्षीतप के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि यह दिन भगवान ऋषभ की 400 दिनों की तपस्या की पूर्णता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भगवान ऋषभ प्रथम तीर्थंकर, भिक्षु और याचक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

मुनि दीपकुमार जी ने वर्षीतप के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए रस-लोलुपता पर नियंत्रण की प्रेरणा दी। मुनि भव्य कुमार जी ने अपने तृतीय वर्षीतप की पूर्णता पर अनुभव साझा किए तथा भगवान ऋषभ, इक्षु और श्रेयांस से जुड़ी प्रेरणाओं का उल्लेख किया।

मुनि जयेश कुमार जी ने भगवान आदिनाथ के पुरुषार्थ चतुष्टय और प्रयोगधर्मा स्वरूप पर विचार व्यक्त किए। मुनि काव्यकुमार जी ने अपने विचारों को काव्यात्मक स्वरूप में प्रस्तुत किया। पारणोत्सव के मुख्य उपक्रम में 18 वर्षीतप तपस्वियों ने मुनिवरों को इक्षु रस का दान देकर तप की पूर्णाहुति की। महिला मंडल ने अनुमोदना गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में तपस्वियों का सम्मान जैन प्रतीक व अभिनंदन पत्रों द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष अशोक खतंग ने स्वागत भाषण व मंत्री गजेंद्र खांटेड ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मनोज डूंगरवाल ने किया।

## न्यू टाउन, कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप पारणा समारोह का आयोजन महाश्रमण विहार, न्यू टाउन, राजारहाट में संपन्न हुआ। यह आयोजन आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन (आमरेफ) एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, साल्टलेक के संयुक्त तत्वावधान में हुआ, जिसमें 20 वर्षीतप आराधिका बहनें सहभागी बनीं।

समारोह की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने अक्षय तृतीया का आध्यात्मिक महत्व बताते हुए भगवान ऋषभदेव के तप व उनके द्वारा प्रारंभ की गई सभ्यता यात्रा की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान ऋषभ असि, मसि व कृषि के प्रवर्तक थे तथा कर्म-मुक्ति का मार्ग उन्होंने ही प्रशस्त किया। मुनिश्री ने बताया कि तेरह महीने दस दिन तक एक दिन उपवास व एक दिन आहार की विधि को वर्षीतप कहा जाता है। इस अवसर पर 20 बहनों ने वर्षीतप पूर्ण कर इक्षुरस द्वारा पारणा किया तथा कुछ बहनों ने आगामी वर्ष के लिए पुनः वर्षीतप का संकल्प लिया। कार्यक्रम में मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण आमरेफ अध्यक्ष भीखमचंद पुगलिया व सभा अध्यक्ष जयसिंह डागा ने दिया। तुलसी दुगड़ ने अपने विचार रखे। तपस्वियों के परिवारजनों ने भावपूर्ण अनुमोदना प्रस्तुत की। संचालन मुनि परमानंद जी व सुरेन्द्र बोरड द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन सुरेन्द्र बोरड (आमरेफ) व अशोक भूतोड़िया (साल्टलेक सभा) ने किया।

## हैदराबाद

भगवान ऋषभदेव के पुण्यस्मरण, दान की भावना और वर्षीतप की पूर्णाहुति को समर्पित अक्षय तृतीया समारोह का आयोजन कच्छी भवन, रामकोट, हैदराबाद में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 13 वर्षीतप साधकों की अनुमोदना की गई और दो दंपत्ति जोड़ों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का भी संकल्प लिया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने कहा कि आज का दिन भगवान ऋषभदेव की स्मृति में पुण्यदायक है। इक्षुरस, सुपात्र दान और ऋषभदेव का संयोग अक्षय तृतीया के दान की महिमा को प्रतिष्ठित करता है। उन्होंने कहा कि भौतिकता का त्याग ही शाश्वत सुख-शांति की ओर ले जाता है। जो कर्मशूर होता है, वही धर्मशूर बनता है। भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि और 72 कलाओं का प्रशिक्षण देकर कला, संस्कृति और विज्ञान की नींव रखी। उन्होंने सामाजिक व्यवस्था स्थापित की और संयम पथ की ओर अग्रसर हुए। साध्वीश्री ने आदिनाथ की शिक्षा को 'आध्यात्मिक वसीयत' बताते हुए कहा कि जैसे माता-पिता बच्चों के लिए वसीयत छोड़ते हैं, वैसे ही आदिनाथ ने शिक्षा दी कि कर्मों का भुगतान आत्मा को स्वयं करना होता है। उन्होंने बताया कि 12 घड़ी के अंतराय ने ऋषभदेव को 12 महीने के अंतराय का फल दिलाया। इसलिए सत्कर्मों का अर्जन आवश्यक है। तपस्वियों के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि जो पतन से बचाए, वही तप है। उन्होंने सुंदर स्वरचित गीत के माध्यम से उपस्थित साधकों को आध्यात्मिक संदेश दिया और भगवान की तरह कर्मशूर बनने और इच्छाओं को कम करने का आह्वान किया। साध्वी मयंकप्रभा ने कहा कि अक्षय तृतीया का महत्त्व जैन ही नहीं, अपितु अन्य धर्मों में भी है — जैसे गंगा अवतरण, कृष्ण-सुदामा मिलन और परशुराम जन्म जैसे प्रसंग इसी दिन से जुड़े हैं।

साध्वी दक्षप्रभा ने सुमधुर गीतिका द्वारा तपस्वियों का अभिनंदन किया। सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने स्वागत भाषण में भगवान आदिनाथ के जीवन-दर्शन से प्रेरणा लेने की बात कही। महिला मंडल सहमंत्री शीतल सांखला, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष वीरेंद्र घोसल तथा तपस्वियों के परिजन ने भी श्रद्धा स्वर प्रस्तुत किए।

# साध्वीश्री संचितयशाजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

## अग्रगामी के पथ की पथिक बन गईं

● साध्वी कीर्तिलता आदि साध्वी वृन्द ●

मुंबई के अर्जुनलाल गन्ना से ज्ञात हुआ कि साध्वी संचितयशा जी का संथारे में स्वर्गवास हो गया। सुनते ही हम शॉक हो गए। छोटी अवस्था में, प्रबुद्ध व समझदार साध्वी इस प्रकार संसार से विदा हो गईं। भगवान महावीर ने आप्तवाणी में फरमाया — 'इयं शरीरं अणिच्चं'। यह शरीर अनित्य है। काल कब ग्रसित कर ले, कहा नहीं जा सकता।

पिछले कई वर्षों से साध्वी संचितयशा जी को चिकित्सा की शरण लेनी पड़ी। फिर भी 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी की पूरी तन्मयता के साथ सेवा की। उन्हें समाधि पहुंचाई — इसका हमें गौरव है। लगभग 10 माह के अंतराल में साध्वी संचितयशा जी अपने अग्रगामी का अनुसरण कर उनके पथ की पथिक बन गईं। हमने श्रीडूंगरगढ़, जोधपुर पावस में देखा — मोती जैसे अक्षर थे साध्वी संचितयशा जी के। जो भी काम हाथ में लेतीं, पूरी निष्ठा व लगन से संपादित करतीं। पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भय का कुहासा छाया ही रहता। मुंबई के विमल सोनी से ज्ञात हुआ कि अंतिम समय में अनंत-अनंत वेदना को समभाव से सहन कर, संचितयशा जी ने अपने जीवन को सफल बनाया है।

हम मंगल कामना करते हैं कि उनकी आत्मा आध्यात्मिक यात्रा में उत्तरोत्तर विकास करती हुई सिद्ध गति को प्राप्त करे। साध्वी शकुंतला जी ने एक वर्ष में अपने अग्रगामी व सहयोगी दो-दो साध्वियों को खोया है। मन में उद्विग्नता आना सहज है, पर धैर्य व साहस से काम लेना है। साध्वी जागृतप्रभा जी व रक्षितयशा जी को निर्जरा का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

## कर्मठ, निर्जरार्थी और स्वाध्यायप्रिय साध्वी

● साध्वी निर्वाणश्री आदि साध्वी वृंद ●

प्रबुद्ध, शांत, सौम्य एवं इन्द्रिय-निग्रह सम्पन्न साध्वी संचितयशा जी को लगभग 35 वर्ष पूर्व गुरुदेव श्री तुलसी के कर-कमलों से दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुकुलवास में कुछ समय तक साथ में रहे।

उस समय मैंने उनको एक कर्मठ, निर्जरार्थी और स्वाध्यायप्रिय साध्वी के रूप में देखा। वे दो दशकों से भी अधिक समय तक स्व. शासनश्री साध्वी सोमलता जी के ग्रुप में अभेदभाव से रहीं। उन्होंने रूग्णावस्था में साध्वीश्री की परिचर्या के लिए अपने आपको नियोजित किया। वर्तमान में वे साध्वी शकुंतला जी की सहवर्ती के रूप में थीं।

वे मार्ग में सूरत प्रवास के दौरान आकस्मिक रूप से अस्वस्थ हो गईं। स्वास्थ्य लाभ के लिए पुनः मुंबई में आना हुआ। उपचार के पश्चात वे एक बार के लिए स्वस्थ भी हो गईं, और पुनः अस्वस्थता की चपेट में आ गईं। उन्होंने शांति व समता के साथ तीव्र वेदना को सहा। अंत में अनशन स्वीकार कर अपना अंतिम मनोरथ भी पूरा कर लिया। साध्वी शकुंतला जी, जागृतयशा जी, रक्षितयशा जी ने मनोयोगपूर्वक उनकी सेवा की। सभी साध्वियां अपना मनोबल दृढ़ से दृढ़तर रखें। नंदनवन (मुंबई) प्रवास में उनके साथ बिताए गए क्षणों को साध्वी योगक्षेमप्रभा जी आदि सभी साध्वियां समय-समय पर याद करती रहती हैं। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक विकास की अनेकशः मंगलकामनाएं।

## अद्भुत था विनम्र स्वभाव और समर्पण भाव

● साध्वी पीयूषप्रभा ●
आदि साध्वी वृंद

साध्वी संचितयशा जी ने गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी से संयम रत्न स्वीकार कर अपने जीवन को साधना के पथ पर आगे बढ़ाया। शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में आपने खूब विकास किया। प्रतिभा सम्पन्न होते हुए भी आपका विनम्र स्वभाव और समर्पण भाव अद्भुत था। अचानक वेदनीय कर्म का उदय हुआ और शरीर जवाब देने लगा। आपने संथारे का प्रत्याख्यान कर दृढ़ मनोबल का परिचय दिया, और बहुत शीघ्र ही अनशन पूर्ण भी हो गया। यह आपके जीवन की सार्थकता है। हम सभी आपके आत्मिक विकास की मंगलकामना करते हैं। साध्वी शकुंतलाश्री जी, साध्वी जागृतप्रभा जी और साध्वी रक्षितयशा जी ने आपको चित्त समाधि तक पहुंचाया है। स्मृतियों के झरोखे में लगभग एक वर्ष पूर्व के मलाड प्रवास के वे क्षण अविस्मरणीय हैं। साध्वी संचितयशा जी की आत्मा शीघ्र ही मोक्षश्री का वरण करे — हार्दिक मंगलकामना।

## अप्रमत्त साधना करने वाली साध्वी

● साध्वी पुण्ययशा ●

मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह ऐसा जीवन जीए जिससे जीवन का एक-एक पल विकास की ऐसी उपलब्धि बने जो जीवन को चरम लक्ष्य — मोक्ष — तक पहुंचा दे। इस विशुद्ध और पवित्र लक्ष्य का एक बड़ा सेतु है प्रव्रज्या (संयम)। संयम जीवन की एक अमूल्य निधि है। चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशम, गुरु-कृपा और प्रबल भाग्योदय से ही संयम की प्राप्ति संभव हो सकती है।

साध्वी संचितयशा जी ने उत्कृष्ट वैराग्य से गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के कर-कमलों से संयम रत्न को अंगीकार किया। हमने उनको सेवाभावी, विनम्र, जागरूक, स्वाध्यायशील और अप्रमत्त साधना करने वाली साध्वी के रूप में देखा। अपनी उदारता, मिलनसारिता, सहनशीलता, कार्यकुशलता और श्रमनिष्ठा से उन्होंने संघ में अपनी पहचान बनाई। वर्षों तक शासनश्री साध्वी सोमलता जी की सहवर्ती साध्वी के रूप में रहकर उन्होंने अपने जीवन को सद्संस्कार व सद्संकल्पों से सजाया। शासनश्री साध्वी सोमलता जी की असाध्य बीमारी में — साध्वी शकुंतलाश्री जी, साध्वी संचितयशा जी, साध्वी जागृतयशा जी, साध्वी रक्षितयशा जी — पूरे ग्रुप ने बहुत मनोयोग से उनकी सेवा की। उन्होंने उन्हें चित्त समाधि तक पहुंचाया। उन क्षणों की मैं भी साक्षी हूं। उस समय तीन दिन दादर में साथ रहने का भी अवसर मिला। वर्तमान में साध्वी शकुंतलाश्री जी की सहवर्ती साध्वी के रूप में, साध्वी संचितयशा जी ने अनशनपूर्वक समाधि-मरण का वरण किया। अभी साध्वी संचितयशा जी के जाने का समय नहीं था, पर इस क्षण को कोई नहीं टाल सकता। साध्वी शकुंतलाश्री जी आदि सभी साध्वियों ने उनकी बहुत सेवा की। वे उनकी चित्त समाधि में सहयोगी बनी हैं। अंतिम समय में साहस के साथ उन्हें अनशन करवाकर साधु के तीसरे मनोरथ को पूर्ण किया है। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

## संयम-जीवन पर कलश है संथारा

● शासनश्री साध्वी शिवमाला, टमकोर ●

शासनश्री साध्वी सोमलता जी की सेवा में, साध्वी शकुन्तला कुमारी जी दायें हाथ के रूप में और साध्वी संचितयशा जी बायें हाथ के रूप में सेवा करती हुईं अग्रणी के इंगित-आराधना में अत्यंत जागरूक थीं। साध्वी संचितयशा जी प्रबुद्ध युवा साध्वी थीं, जो आचार्य श्री महाश्रमण जी के युग में संयम की साधना कर रही थीं। संस्था में प्रवेश से पूर्व उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में डबल एम.ए. किया था। वे हस्तकला में निपुण थीं और अनेक प्रकार की कलाओं में दक्षता प्राप्त की थी। कुछ महीनों पूर्व ज्ञात हुआ कि साध्वी संचितयशा जी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है और वे पुनः मुंबई आ गई हैं। मन में उमंग थी कि विलेपार्ले जाकर साध्वी शकुन्तला कुमारी जी से मिलूं और साध्वी सोमलता जी के संवादों से अवगत हो जाऊं। परंतु अचानक सूचना मिली कि साध्वी संचितयशा जी ने संथारा स्वीकार कर लिया है। सायं प्रतिलेखना कर रही थी तब एक बहन ने आकर बताया कि साध्वी संचितयशा जी का संथारा सीझ गया है। प्रबल पुण्याई से भिक्षु शासन में उन्हें संयम रत्न प्राप्त हुआ। गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी, युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी तथा वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी की छत्रछाया में उन्हें अनहद कृपा प्राप्त हुई। साध्वी शकुन्तला कुमारी जी आदि साध्वियों की सेवा कर उन्होंने भिक्षु शासन के गौरव को बढ़ाया। संथारा संयम-जीवन पर कलश है, संयम-जीवन की एक विशिष्ट उपलब्धि है। साध्वी संचितयशा जी की आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती हुई शीघ्र मोक्ष के निकट पहुंचे।

## प्रतिभा सम्पन्न, श्रमनिष्ठ साध्वी संचितयशा जी

● साध्वी साधनाश्री आदि साध्वी वृंद ●

आने वाला जाएगा — यह निश्चित है, किंतु साध्वी संचितयशा जी इतनी जल्दी मनुष्य लोक को छोड़ देंगी, ऐसी कल्पना भी नहीं थी। साध्वी संचितयशा जी परिवार में संसार पक्ष की बहन लगती थीं। लगभग पाँच वर्षों तक शासनश्री साध्वी सूरजकुमारी जी के साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने अनुभव किया कि वे एक गंभीर साध्वी थीं। प्रतिभा सम्पन्न, श्रमनिष्ठ, अप्रमत्त, ज्ञान व चेतनायुक्त थीं। उनमें विनय और समर्पण का अद्भुत संगम था। पिछले कुछ वर्षों से वे असाता वेदनीय कर्म को भोग रही थीं। अंतिम समय में तो ऐसा प्रतीत होता है मानो उन्होंने अत्यंत वेदना को समभाव से सहन कर अति-निर्जरा की है। शरीर के ममत्व और जिजीविषा को त्यागकर, जागरूकता पूर्वक संथारा कर, समाधि-मरण का वरण किया। अब तो उस आत्मीय संबंध की स्मृतियाँ मात्र शेष हैं। साध्वी संचितयशा जी की दिव्य आत्मा हमें संयम में सहयोग प्रदान करे तथा निज आत्मा का उत्थान करती हुई शीघ्र मुक्तिपद का वरण करे।

## जप एवं तप की निष्पत्ति है — समाधि मरण

● शासनश्री साध्वी यशोधरा ●

वीतराग कल्प महातपस्वी, करुणा कुबेर आचार्य श्री महाश्रमण जी की वात्सल्यमयी छत्रछाया में साध्वी संचितयशा जी अपनी संयम-यात्रा में बड़ी सजगता से यात्रायित थीं। वे प्रबुद्ध, विनम्र, व्यवहार-कुशल, उपशांत कषाय, संघपति के प्रति समर्पित, मर्यादा-निष्ठ, ऋजुमना साध्वी थीं। जीवन भर जपे हुए जप एवं तपे हुए तप की निष्पत्ति है — अनशनपूर्वक समाधि मरण का वरण। साध्वी शकुन्तला जी की निश्रा में, इंगियागार संपन्न साध्वी संचितयशा जी ने शौर्य, वीर्य एवं पराक्रम से अनशनपूर्वक समाधि मरण का वरण किया है। विलेपार्ले तीर्थभूमि बन गई है। दिवंगत पवित्रात्मा की चेतना के ऊर्ध्वरोहण की मंगल कामना करती हूँ — निकट भव में वे सिद्धश्री का वरण करें।

## हद हिम्मत दिखलाई

● साध्वी सरसप्रभा ●

संचितयशाजी चढ़ते भावों, अनशन ज्योत जलाई।
हद हिम्मत दिखलाई।।

जनम-जनम की पुण्याई से भैक्षव गण है पाया,
महातपस्वी महाश्रमण का, मिला है सुन्दर साया।
घोर वेदना में संथारा कर, आत्मा को चमकाई।

सहज सरलता और विनम्रता, सेवाभावी भारी,
पापभीरूता, स्वाध्यायी, हर क्षण समताधारी।
मुम्बई नगरी में तपकर, शासन शान बढ़ाई।।

सोच विचार चिन्तन मंथनकर, तन का सार निकाला,
गुरु कृपा से सतिवर तुमने पाया, सिन्धु किनारा।
सरसप्रभाजी को आती है, हरपल स्मृतियाँ थांरी।।

लय- संयम मय जीवन

# ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला का आयोजन

**महरौली, दिल्ली।**

दिल्ली, NCR, यूपी अंचल के ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला का आयोजन अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली, तेरापंथ भवन परिसर, दिल्ली में बहुश्रुत परिषद सदस्य, ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमार जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। फरीदाबाद ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। मुनि उदितकुमार जी ने रिफ्रेशर कोर्स के महत्व और नवाचार पर प्रकाश डाला। आंचलिक संयोजक महिम बोथरा ने कार्यक्रम में पधारे सभी संभागियों का स्वागत किया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चौपड़ा ने ज्ञानशाला प्रारूप पर विस्तृत जानकारी दी।

ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक निर्मल नौलखा ने जैन धर्म और तेरापंथ के मूलभूत सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर डॉक्टर रत्ना कोठारी ने कोऑपरेटिव लर्निंग स्ट्रैटेजी के प्रयोग की व्यावहारिक विधियां सिखाईं। ज्ञानशाला राष्ट्रीय परीक्षा व्यवस्थापक सुरेंद्र लूनिया ने ज्ञानशाला परीक्षा पर विस्तृत जानकारी दी। प्रतिक्रमण, कंठस्थ ज्ञान एवं उच्चारण सत्र में ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक डालिमचंद नौलखा ने शुद्ध उच्चारण पर बल दिया। अंजू चौधरी ने समय सारिणी और प्रायोगिक जानकरी प्रदान की। 'खेल-खेल में' नॉएडा ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानशाला और म्यूजिकल मेमोरी क्विज आयोजित हुआ, जिसमें दर्शन ग्रुप ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

द्वितीय दिवस की शुरुआत प्रेक्षाध्यान सत्र से हुई, जिसमें विमल गुनेचा के मार्गदर्शन में ध्यान और योगाभ्यास कराया गया। मुनि उदित कुमार जी ने प्रशिक्षिकाओं से संवाद कर ज्ञानशाला संचालन में समर्पण भाव के महत्व को रेखांकित किया। प्रोफेसर डॉक्टर रत्ना कोठारी ने Lesson Planning पर व्यावहारिक सत्र संचालित किया। सरोज छाजेड़ ने कैसे हो "व्यक्तित्व विकास" पर प्रभावी सुझाव दिए। संस्कृति भंडारी ने कहानी सुनाने की कला पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया। निर्मल नौलखा ने पच्चीस बोल पुनरावर्तन में गुणस्थान पर चर्चा की।

कार्यशाला के अंतिम चरण में स्नातक उत्तीर्ण प्रशिक्षिकाओं को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया व सहयोगी कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के संचालन में कविता लोढ़ा, श्वेता हीरावत, कुसुम बोरड, राजेश दूगड़ और भरत बेगवानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यशाला में प्रशिक्षकों को ज्ञानशाला को अधिक प्रभावी और रोचक बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

## पृष्ठ 1 का शेष

### साध्य के साथ साधन...

जब कोई कठोरता उच्च उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हो, तो उसे स्वीकार किया जा सकता है। शुद्ध साधन की भी अपनी सीमाएं होती हैं। साधु की भूमिका अलग होती है, गृहस्थ की अलग। साधु तो सर्व हिंसा का त्याग करते हैं। निर्दोष को पीड़ित करना अशुद्ध साधन माना जाता है। अतः भिन्न-भिन्न भूमिकाओं में साध्य और साधन की शुद्धता की भिन्न व्याख्याएं हो सकती हैं। उसी प्रकार भय और अभय के भाव भी संदर्भानुसार समझे जा सकते हैं। गलती होने पर उलाहना देना भी उचित होता है, पर स्वयं संयम के प्रति भी सजग रहना चाहिए। चतुर्दशी के अवसर पर पूज्यवर ने हाजरी वाचन कराते हुए मर्यादाओं को समझाया और प्रेरणाएं प्रदान कीं कि पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्तियों की अखंड आराधना होती रहे। संसार में संन्यास से बढ़कर और क्या हो सकता है? जीवन के अंतिम श्वास तक साधुत्व सुरक्षित रहे। उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्य प्रवर ने आगे फ़रमाया - हमारे यहां संयम पर्याय का महत्व है और उसी के अनुरूप सम्मान दिया जाना चाहिए। आज ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी है, मुख्य मुनि का मनोनयन दिवस है। दो दिन पूर्व साध्वीवर्या की नियुक्ति दिवस था।

जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रसंग है— संयम जीवन का मिलना और उसमें सेवा का अवसर प्राप्त होता होना। उस सेवा के मौके का सुंदर तरीके से लाभ उठाने का प्रयास चलता रहे। साध्वी वर्या भी अपने ढंग से काम करती रहें, खुद का स्वाध्याय भी चलता रहे। मुख्य मुनि का बाहुश्रुत्य भी निखरता रहे। वे अपने विकास के साथ निर्भीक जीवन जिएँ, और संगठन व्यवस्था से जुड़े रहकर अपेक्षानुसार सेवा करते रहें। आचार्यश्री ने मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी के मनोनयन दिवस के संदर्भ में उन्हें मंगल आशीष प्रदान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो महापुरुष होते हैं, उनके कंठ में अमृत का वास होता है। उनकी वाणी आदरणीय होती है। लोग उनके वचनों को सुनना और अपनाना चाहते हैं। यदि हमें अमृत प्राप्त करना है तो गुरु उपासना करनी चाहिए। उपासना से आत्मबोध प्राप्त होता है, भीतरी प्रवृत्तियों का परिष्कार होता है और शांति-सामाधि प्राप्त होती है। इससे चित्त की विशुद्धता विकसित होती है। पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष महावीर चावत, विकेश दक, ब्रह्मकुमारी शोभनाबेन, माहेश्वरी समाज की ओर से शिव मूंदड़ा, दिनेश भाई डाभी, मुकेशभाई त्रिवेदी, विद्यालय के प्रमुख रोहितभाई त्रिवेदी ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। भिलोड़ा के सरपंच प्रमोद राय व सिद्धि जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। वंदना भटेवरा ने गीत को प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल एवं महेश्वरी महिला मंडल ने गीतों के माध्यम से पूज्यवर का भावभरा अभिवंदन किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

---------------------

### सम्यक् ज्ञान का सार...

सद्ज्ञान सम्पन्नता और सद्गुण सम्पन्नता जीवन के लिए बहुत बड़ी सम्पत्ति होती है। तेरापंथी परिवार का कोई बच्चा है तो ध्यान दिया जाए कि वह ज्ञानशाला जाता है या नहीं? बच्चों को बचपन से ही ज्ञान के साथ अच्छे धार्मिक संस्कार दिए जाने चाहिए। स्कूल जाना आवश्यक है, पर वहाँ भी उन्हें श्रेष्ठ संस्कार मिलें — यह ज़रूरी है। जीवन-विज्ञान से बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है। बाल पीढ़ी में यदि ज्ञान के साथ उत्तम संस्कार आ जाएँ तो एक नई उज्ज्वल पीढ़ी का निर्माण हो सकता है। संस्कारयुक्त शिक्षा हो। बच्चों में निर्भीकता के साथ-साथ निरहंकारिता भी हो। जब ज्ञान और आचरण दोनों पुष्ट होते हैं, तो वह जीवन के लिए अत्यंत शुभ होता है। पूज्यवर के स्वागत में अध्यापक धर्मेश पटेल ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## बोलती किताब

### आत्मा के आसपास

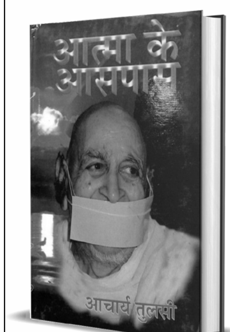


**ध्यान प्रशिक्षण की व्यवस्था-** प्राचीन साहित्य में गुरु की उपासना का बहुत महत्त्व रहा है ।उपासना का अर्थ है—पास में बैठना। गुरु के पास बैठने वाला, उनकी उपासना करने वाला जिस तत्त्व को प्राप्त कर सकता है, उसे दूर रहने वाला नहीं पा सकता। उपासना करने वाले साधक को केवल सुनने या जानने का ही संयोग नहीं मिलता, गुरु के आभामंडल का आलोक भी मिलता है ।गुरु के आभामंडल की सीमा में प्रवेश करते ही शिष्य को अतिरिक्त शांति का अनुभव होता है।गुरु के अमित वात्सल्य से जीवन को नई दिशा मिलती है और परिवर्तन की संभावनाएं पुष्ट हो जाती हैं।

**ध्यान का गुरुकुल** -प्रत्येक प्रवृत्ति की सफलता और असफलता के लिए उसका मूल्यांकन होना बहुत जरूरी है । धर्म के क्षेत्र में तो ऐसा होना ही चाहिए । कोई व्यक्ति धर्म की साधना करे और उसका मूल्यांकन न हो तो उसे अपनी प्रवृत्ति की सार्थकता का पता ही नहीं लग सकता । किसी भी साधना का सही-सही बोध उसके मूल्यांकन से ही होता है । ध्यान का साधक भी अपने प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में आगे बढ़ता है, किंतु कभी-कभी वह पीछे भी खिसक जाता है ।

**अंतर्यात्रा** - मनुष्य की वृत्तियां दो प्रकार की होती हैं—बाह्य और आंतरिक । अथवा इस तथ्य को यों भी कहा जा सकता है कि वृत्तियों के आधार पर मनुष्य दो प्रकार के होते हैं—बहिर्मुखी और अंतर्मुखी । बहिर्मुखता स्वाभाविक है और अंतर्मुखता साधना-सापेक्ष है । बहिर्मुख बनने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता, जबकि अंतर्मुखता के लिए तीव्र प्रयत्न की अपेक्षा रहती है । प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए अंतर्मुखी होना बहुत जरूरी है, पर ऐसा होना बहुत कठिन है ।

**चैतन्य-केंद्रों का प्रभाव-** मानव शरीर में अनेक चैतन्य-केंद्र हैं । सारे केंद्र ज्ञात नहीं हो पाए हैं और यह संभव भी नहीं हैं । क्योंकि यह पहले बताया जा चुका है कि समूचे शरीर को करण बना लेने पर शरीर का कण-कण चेतना का विशिष्ट केंद्र बन सकता है । फिर भी कुछ केंद्रों की अलग से पहचान बनाई जा सकती है । प्रेक्षा-ध्यान के अभ्यास में अब तक मुख्य रूप से तेरह केंद्रों पर ध्यान करवाया जा रहा है। ज्ञान-केंद्र के विकास से अंत:प्रज्ञा जाग्रत होती है। अंत:प्रज्ञा के जागरण का संबंध ललाट से भी है। केंद्र-जागरण की दिशा में उठा हुआ एक-एक पग भी व्यक्ति को अपनी मंजिल तक पहुंचा सकता है ।

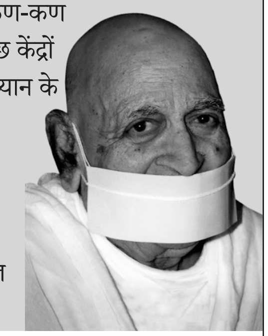

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
**आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती**
+91 87420 04849 / 04949 | https://books.jvbharati.org | books@jvbharati.org

# वर्षीतप अनुमोदना का हुआ कार्यक्रम

**साउथ हावड़ा।**

साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान एवं तेयुप साउथ हावड़ा के संयुक्त आयोजन में वर्षीतप अनुमोदना का कार्यक्रम साउथ हावड़ा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथ मंडल, अर्हम मंडल, महाश्रमण मंडल के साथ अनेक व्यक्तियों ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियां दी। सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, चैयरमेन संजय नाहटा, महिला मंडल अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया, तेयुप उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने अपनी भावनाएं प्रस्तुत की।

सभा परिवार की ओर से क्षेत्र की 7 तपस्विनी बहनों को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

तेयुप एवं टीपीएफ साउथ हावड़ा ने भी बहनों का सम्मान प्रशस्ति पत्र के द्वारा किया। कार्यक्रम में श्रावक समाज की अच्छी भागीदारी रही। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री बसन्त पटावरी ने किया।

# साध्वी संचितयशा जी की स्मृति सभा का आयोजन

**विलेपार्ले, मुंबई।**

परोपकार सम्राट आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी शकुंतला कुमारी जी के सान्निध्य में साध्वी संचितयशा जी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ।

साध्वी शकुंतला कुमारी जी ने अपने वक्तव्य में कहा, "गुरुदेव की असीम कृपा से मैं 26 वर्षों तक उनके साथ रही। साध्वी संचितयशा जी की व्याख्यान शैली बहुत अच्छी थी। वह एक अध्ययनशील तथा तत्वज्ञान में निपुण साध्वी थीं। उनकी मिलनसारिता, विनम्रता, सहनशीलता तथा व्यवहार-कुशलता सभी के दिलों को आकृष्ट करती थी। उन्होंने 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी के साथ लगभग 25 वर्षों तक साध्वी के रूप में सेवा दी। उनको चित्त समाधि पहुंचाने तथा उनकी सेवा में हर पल सजग रहीं।"

उन्होंने आगे कहा, "साध्वी संचितयशा जी ने मेरे हर कार्य में आत्मीय सहयोग दिया, जिसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती। अंतिम समय में भयंकर असाता वेदनीय कर्मों को समभाव से सहन करते हुए उन्होंने पंडित मरण को प्राप्त किया। उनकी आत्मा शीघ्र ही मोक्ष श्री का वरण करे, ऐसी मंगल कामना करती हूं।"

साध्वी जागृतप्रभा जी ने कहा, "साध्वी संचितयशा जी ने मुझे हर क्षेत्र में विकास करने का अवसर प्रदान किया—बोलना, लिखना, पढ़ना, सिलाई, रंगाई आदि साधु जीवन के समस्त कार्यों में मेरा हर पल सहयोग दिया। मैं उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहूंगी।"

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी, साध्वी प्रमुखाश्री जी तथा उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के संदेशों का वाचन किया गया।

साध्वी रक्षितयशा जी ने कहा, "साध्वी संचितयशा जी ने बड़ी बहन की तरह प्रेम और वात्सल्य दिया। वह मुझे परमानंद की राह पर चलने की प्रेरणा देती रहीं। वे एक आत्मस्थ तथा गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित साध्वी थीं। उनके साथ बिताया हर क्षण मेरी स्मृति-पटल पर अंकित रहेगा।"

उन्होंने आगे कहा, "हम तीनों ही साध्वियाँ आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। गुरुदेव ने साध्वी संचितयशा जी के लिए फरमाया था कि साध्वी संचितयशा यदि देवलोक में सीमंधर स्वामी आदि तीर्थंकरों के दर्शन कर सकें तो प्रयास करें। वहाँ से प्रेरणा-संदेश प्राप्त करके अगले भव में मनुष्य जन्म को प्राप्त कर अपनी साधना करने का लक्ष्य रखें। हम तो यह सुनकर धन्य-धन्य हो गए।"

साध्वी संचितयशा जी की चिकित्सा में डॉक्टरों की सराहनीय सेवा रही। डॉ. सौरभ जैन, डॉ. हार्दिक शाह, डॉ. मयूर शाह, डॉ. जिम्पु जैन आदि की विशेष सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। संसार-प्रक्षीय माँ श्रद्धा की प्रतिमूर्ति किरण देवी, भाई सिद्धार्थ, सुभाष, संजय आदि पारिवारिक सदस्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुंबई सभा के अध्यक्ष माणक धींग, मंत्री दिनेश जैन, डॉ. दिलीप सरावगी, विमल सोनी, अभिषेक गोयल, विलेपार्ले तेयुप अध्यक्ष महेन्द्र वडाला, मंत्री रॉकी कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष रेखा कोठारी आदि विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने श्रद्धांजलि अर्पित की। चार लोगस्स के ध्यान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी रक्षितयशा जी ने किया।

# अभिनंदन व्यक्ति का नहीं, गुणों का होता है

**दिल्ली।**

आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान शिष्य, बहुश्रुत परिषद के सदस्य एवं ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमारजी ने सूरत से लगभग 1450 किलोमीटर की प्रलंब यात्रा संपन्न कर दिल्ली महानगर में प्रवेश किया।

आध्यात्म साधना केंद्र महरौली-दिल्ली में पदार्पण पर सभी संघीय संस्थाओं द्वारा मुनिश्री का स्वागत अभिनंदन किया गया। महाप्रज्ञ भवन में आयोजित अक्षय तृतीया समारोह में प्रदत्त अपने उद्बोधन में मुनि उदितकुमारजी ने कहा कि अभिनंदन व्यक्ति का नहीं, गुणों का होना चाहिए। राजधानी दिल्ली में हमारा चातुर्मास सत्य, अहिंसा, शांति एवं सद्भावना की अलख जगाने के लिए हो रहा है। आचार्य श्री महाश्रमण के नैतिक एवं मानवतावादी कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए हम प्रयासरत रहेंगे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि अक्षय तृतीया का दिन आदि तीर्थंकर ऋषभ की स्मृति का पावन दिन है। यह उनकी एक विशेष तप की परिसंपन्नता का दिन है, यह हमें धैर्य व सहिष्णुता की प्रेरणा देता है। यह जीवन में तप एवं साधना के लिए प्रेरित करता है। वर्षीतप का क्रम लंबे समय से चल रहा है, इस क्रम में तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में सूरत में 1015 से अधिक वर्षीतप पारणों का कीर्तिमान रचा गया।

इस अवसर पर मैं सभी वर्षीतप तपस्वी जनों के तप की अनुमोदना करता हूं। मुनिश्री ने अपने परम उपकारी आचार्य श्री महाश्रमण जी की दीक्षा प्रदाता श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी की छठी वार्षिक पुण्यतिथि पर उनका प्रासंगिक स्मरण कर अपना श्रद्धार्पण किया।

कार्यक्रम में डॉ. मुनि अभिजीत कुमारजी ने अपने प्रासंगिक विचार प्रस्तुत किये। मुनि जागृतकुमारजी एवं मुनि ज्योतिर्मयकुमारजी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनिश्री के सान्निध्य में 9 तपस्वी भाई-बहनों ने इक्षुरस बहराकर अपने वर्षीतप का पारणा किया। तेरापंथ सभा दिल्ली द्वारा तपस्वियों का साहित्य आदि से सम्मान किया गया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया आदि अनेक तपस्वी परिवार के ज्ञातिजन एवं अन्य लोगों ने अपनी मंगलकामना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा दिल्ली के मंत्री श्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

# टीपीएफ इंटरब्रांच कनेक्ट: एक अनोखी पहल

**हैदराबाद।**

विशाखापत्तनम और कोयंबत्तूर शाखाओं के बीच ज़ूम के माध्यम से एक अनोखी पहल इंटरब्रांच कनेक्ट आयोजित की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत हैदराबाद शाखा द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई, जिसके बाद हैदराबाद शाखा के अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल ने स्वागत भाषण दिया और सभी से टीपीएफ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े रहने का आह्वान किया। विशाखापत्तनम की अध्यक्षा प्राची सुराना और कोयंबत्तूर शाखा की नामित अध्यक्षा निहार गोलछा ने अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का विषय नेटवर्किंग था, जहां प्रत्येक व्यक्ति ने अपने नियमित कार्यों और टीपीएफ के साथ जुड़ाव के दौरान अपनी रुचियों और उपलब्धियों को व्यक्त किया।

साथ ही प्रश्नों के माध्यम से टीपीएफ के बारे में विशेष जानकारियां प्राप्त की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय संयुक्त सचिव मोहित बैद, दक्षिण क्षेत्र अध्यक्ष विक्रम कोठारी और दक्षिण क्षेत्र सचिव भरत भंसाली, एनईसी सदस्य नवीन सुराना, हैदराबाद, विशाखापत्तनम एवं कोयंबत्तूर के पदाधिकारी उपस्थित थे।

उन्होंने टीपीएफ में नेटवर्किंग के बारे में सभी युवा सदस्यों को जानकारी दी और पेशेवर, व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन हैदराबाद शाखा कोषाध्यक्ष अर्हम बेंगानी ने किया। समापन विशाखापत्तनम शाखा के मंत्री पंकज भुतोरिया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

# शांति व समृद्धि के लिए उपसर्गहर स्तोत्र अनुष्ठान

**नोखा।**

उपसर्गहर स्तोत्र अनुष्ठान में डॉ. मुनि अमृत कुमारजी ने ओम के आकार में बैठे संभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि, "दुःख में विचलित न हो, कष्टों को सहन करें। कष्ट निवारण एवं दुःख मुक्ति के साथ आत्म कल्याण के लिए उपसर्गहर स्तोत्र का विशेष अनुष्ठान चमत्कारी व लाभप्रद है।"

मुनि उपशम कुमारजी ने जप अनुष्ठान क्यों, कब, कैसे, किसलिए किया जाता है की विधिवत जानकारी दी एवं जप प्रयोग से कष्ट निवारण के संस्मरण सुनाए। 25 जोड़े व अन्य भाई-बहनों ने एक घंटा लयबद्ध जप किया। व्यवस्था में रूपचंद जैन व ललित बैद का सहयोग रहा।

- जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।
- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

# जल संरक्षण, कन्या विकास और सुरक्षा हेतु प्रेरणादायी योजनाओं का सफल क्रियान्वयन

गांधीनगर, बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में, तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में सामाजिक सेवा की विभिन्न योजनाओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में "एक बूंद एक सागर - जल संरक्षण", कन्या विकास योजना और कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत तीन उल्लेखनीय सेवाकार्य संपन्न हुए — वाटर कूलर एवं बेंचों का उद्घाटन, कन्या सुरक्षा बेंचेस की स्थापना तथा कन्या सुरक्षा स्तंभ का लोकार्पण।

**जल संरक्षण एवं कन्या विकास के अंतर्गत सेवा कार्य -**

जेएसएस कस्तूरबा स्कूल में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेरणा गीत के संगान से हुआ। विद्यालय में वाटर कूलर और कन्या विकास हेतु बेंचों का उद्घाटन अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल द्वारा किया गया। अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल ने उपस्थित अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए इन सेवाओं के पीछे लगे श्रम का विवरण प्रस्तुत किया। संस्कार शाला के अंतर्गत किए गए कार्यों का अवलोकन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने मंडल की सराहना की। विद्यालय की प्राचार्या योगिनी ने मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया। प्रायोजक परिवार – शांति प्रदीप सकलेचा एवं हेमलता जतन रांका – का मंडल द्वारा विशेष रूप से सम्मान किया गया।

**कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत बेंचेस का उद्घाटन -**

एसएमवीटी रेलवे स्टेशन एवं क्रांतिवीर संगोली रायण्णा रेलवे स्टेशन सहित स्कूलों में कुल 52 कन्या सुरक्षा बेंचेस का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। इस अवसर पर सीनियर डिवीजनल कमर्शियल मैनेजर, दक्षिण पश्चिम रेलवे कृष्ण चैतन्य ने कहा कि स्टेशन पर प्रतिदिन 40,000 यात्रियों का आवागमन होता है और इस प्रकार की सुविधाएं अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने भविष्य में भी मंडल के साथ कार्य करने की इच्छा जताई।

**कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन–**

कूल कॉर्नर, बसवनगुड़ी में कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन भी राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा और महामंत्री नीतू ओस्तवाल के करकमलों से संपन्न हुआ। यह स्तंभ सार्वजनिक स्थान पर कन्याओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। विधायक डॉ. उदय बी. गरुड़ाचार (चिकपेट विधानसभा), बीबीएमपी डिप्टी डायरेक्टर ऑफ़ हॉर्टिकल्चर चंद्रशेखर, और पूर्व पार्षद कविता पोरवाल का विशेष सहयोग इस कार्य में रहा। यह कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अमित भंडारी द्वारा संपादित किया गया।

सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, महासभा के प्रतिनिधि प्रकाश लोढ़ा ने मंडल को मंगल कामनाएं संप्रेषित की। राष्ट्रीय महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री ज्योति संचेती ने किया। संयोजन में वीणा पोरवाल, किरण गिलुंडिया और तारा सेठिया का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रमों में महिला मंडल की राष्ट्रीय परामर्शिका लता जैन, पूर्व अध्यक्ष सहित अनेक पदाधिकारी व बहनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में युवक परिषद अध्यक्ष विमल धारीवाल, प्रकाश मांडोत, रूपचंद देसरला, टीपीएफ अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा, महासभा प्रतिनिधि प्रकाश लोढ़ा, हनुमंतनगर महिला मंडल अध्यक्ष सरोज दूगड़, यशवंतपुर मंडल अध्यक्ष मीनाक्षी दक, दासरहल्ली मंडल अध्यक्ष नेहा चावत सहित कई गणमान्यजनों ने सहभागिता की।

# गुरुदेव की दीक्षा मानो सिद्धि का प्रवेशद्वार है

कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।

साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ सभा दक्षिण दिल्ली के तत्वावधान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का 64वां जन्म दिवस, 52वां दीक्षा दिवस एवं 16 वां पदाभिषेक दिवस हर्षोल्लास के साथ कैलाश कॉलोनी में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा - आचार्य प्रवर का जन्मदिन मात्र किसी व्यक्ति का नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, सकारात्मक विचारों का जन्मदिन है। गुरुदेव की दीक्षा मानों सिद्धि का प्रवेशद्वार है, जिसके तहत् अशुभ से निवृत्त और शुभ में प्रवृत्त होना है। मात्र बारह वर्ष की आयु में बालक मोहन ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को उजागर करने हेतु सांसारिक कार्यों का परित्याग कर अन्तर्चेतना के निखार हेतु मंगलमय यात्रा का शुभारंभ किया जो मानवमन की शुद्धि का पहला कदम था। साध्वी श्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री द्वारा आत्मदर्शन को व्याख्यायित ही नहीं किया जा रहा अपितु जीया जा रहा है।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा चांद सी शीतलता, सूर्य सी तेजस्विता, सागर सी गंभीरता और पापभीरूता लिए आचार्य श्री अपनी निर्लिप्तता, अनासक्त चेतना से अध्यात्म के शिखर पुरुष बन दुनिया में छा गये हैं। इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशा जी ने एक सुमधुर गीत का संगान भी किया।

मुख्य वक्ता कल्याण परिषद् के संयोजक के. सी. जैन ने कहा- आचार्य श्री महाश्रमण का व्यक्तित्व प्रभावक है, नेतृत्व विलक्षण है, कर्तृत्व तेजस्वी है और वक्तव्य शैली बेजोड़ है। युगद्रष्टा आचार्य प्रवर की एक विशेषता यह है कि वे सुनते बहुत हैं पर बोलते उतना ही हैं जितनी जरूरत होती है। आपकी मुस्कान ही सारे प्रश्नों का हल है। मुख्य अतिथि निगम पार्षद राजपाल सिंह ने कहा यह भारत का सौभाग्य है कि आचार्य महाश्रमण जैसे सिद्ध गुरु का आशीर्वाद प्राप्त है। आपका शासन-अनुशासन हम सभी में नई ऊर्जा, प्राणों का संचार कर जीवंतता प्रदान कर रहा है। दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुशील पटावरी ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत कर आचार्य प्रवर की अभ्यर्थना की। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने भो अपने विचार रखे। पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, तेरापंथ महिला मण्डल साउथ दिल्ली की अध्यक्षा शिल्पा वैद, दक्षिण दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा एवं तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण एवं कुशल संचालन साध्वी कल्याणयशा जी ने किया।

# शत्रु के प्रति भी ना हो अहित का चिंतन : आचार्यश्री महाश्रमण

उम्मेदगढ़।
22 मई, 2025

संयम कवच प्रदान करने वाले निस्पृह साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 12 किमी का विहार कर उम्मेदगढ़ के जे. एम. पटेल हाईस्कूल के प्रांगण में पधारे। ज्ञान की अमृत धारा बहाते हुए परम पावन ने फरमाया कि प्राणियों के साथ मैत्री करें।

\दुनिया में युद्ध चलते हैं, आपसी लड़ाई-झगड़े भी चलते हैं। व्यक्ति के भीतर वृत्तियाँ चलती हैं, आक्रोश की वृत्ति भी होती है। जब ये क्रोध, मान, माया, लोभ सुषुप्त अवस्था में होते हैं, तो गुस्सा नहीं आता। जब ये उत्तेजित हो जाते हैं, तो प्राणी गुस्सा कर सकता है।

जहाँ मैत्री है, वहाँ गुस्सा नहीं है। जिसके साथ प्रीति होती है, उसके प्रति गुस्सा भी आ सकता है, पर वह गुस्सा हितकर हो सकता है। प्रीति से जुड़ा गुस्सा हितकर होता है। वीतराग बनने के लिए गुस्से को छोड़ना पड़ेगा। सब प्राणियों के साथ मैत्री है, तो वे सब हमारे मित्र हैं। किसी को नहीं मारूंगा — यह मित्रता की न्यूनतम सीमा है। किसी का कल्याण कर सकें या न कर सकें, पर संकल्पपूर्वक किसी को नहीं मारें। जानबूझकर किसी का अहित न करें। मैत्री भाव प्रतिदिन बढ़ता जाए। कोई दुश्मन है, उसको भी मित्र मान लेना कठिन कार्य होता है, किन्तु उसका अहित न करने का चिंतन भी मित्रता की बात हो सकती है। कहा तो यह गया है कि किसी को शत्रु ही नहीं मानें।

व्यवहार नय से कोई मित्र या शत्रु हो सकता है, पर निश्चय नय से तो हमारी आत्मा ही हमारा मित्र या शत्रु होती है। स्वयं की अहिंसा स्वयं के लिए कल्याणकारी होती है। कहीं विरोध भी हो तो उसे विनोद मान लेना चाहिए। उदारता, गुरुता और महानता का भाव रखें। शांति से जीवन जिएं, अच्छा आध्यात्मिक कार्य करें। हमारी मैत्री-भावना पुष्ट होती रहे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने भी अहिंसा यात्रा की थी। वे गुजरात भी पधारे थे। उत्तर गुजरात में धर्म की भावना प्रवर्धमान होती रहे। विद्यालयों में भी विद्यार्थियों में ज्ञान और संस्कार बढ़ते रहें।

पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय के प्रमुख हितेन्द्रभाई पटेल एवं प्रधानाध्यापक भानुप्रसाद पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

# कर्म करता है कर्त्ता का अनुगमन : आचार्यश्री महाश्रमण

सुद्रासणा।
21 मई, 2025

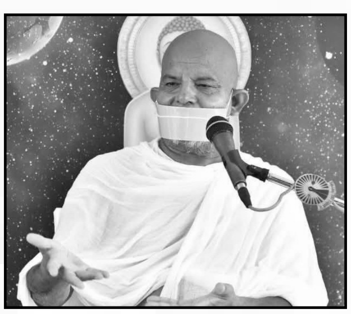

भैक्षवगण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मेहसाणा जिले के उंढाई से मंगल प्रस्थान कर साबरकांठा जिले में मंगल प्रवेश किया। पूज्यवर लगभग नौ किलोमीटर का विहार कर सुद्रासणा स्थित बी.एच. गरडी हाईस्कूल प्रांगण में पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि उत्तरज्झयणाणि आगम में कहा गया है कि किये हुए कर्मों से छुटकारा नहीं मिलता, उनको भोगना ही पड़ता है। तपस्या से कुछ निर्जरण हो सकता है। व्यक्ति जैसा कर्म करेगा, वैसा फल प्राप्त करेगा। कर्मवाद का मूल है - जैसी करणी, वैसी भरणी। जैन दर्शन में आठ कर्म बताये गये हैं। हमारा जीवन इन आठ कर्मों की उदय या विलय रूप में निष्पत्ति है। संसारी प्राणियों के तो कर्मों का जाल बिछा हुआ है। इस जाल से मुक्त होना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। आठ कर्मों में सबसे मुख्य मोहनीय कर्म है। पाप कर्म कराने में मोहनीय कर्म का भी योगदान है। हम किसी का बुरा चाहेंगे तो सामने वाले का बुरा हो या न हो, पर किसी का बुरा चाहने वाला स्वयं का बुरा अवश्य कर लेता है। भला करने वाले का भला ही होता है। हमें किसी के प्रति बुरे भाव नहीं लाने चाहिये। सबके साथ धर्म का आचरण करना चाहिये।

पूज्यवर के स्वागत में हाईस्कूल के प्रमुख लीलाचन्द भाई सेठ, महेश भाई, गांव के सरपंच कांति ठाकुर ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# अहिंसा और समता है परम धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

उंढाई।
20 मई, 2025

ज्ञान के महाभंडार आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 10 किमी का विहार कर उंढाई के शाह नगीनदास परसोत्तमदास हाईस्कूल के प्रांगण में पधारे। मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने कहा, 'जीवन में समता की साधना करके हम विशेष प्रसन्नता को प्राप्त कर सकते हैं। लाभ हो या अलाभ, सुख हो या दुःख, निंदा हो या प्रशंसा, जीवन हो या मृत्यु की स्थिति — चाहे मान मिले या अपमान, इन सभी में समता रहनी चाहिए। क्षमा करना बड़ी बात है। धर्म के क्षेत्र में समता का बहुत महत्व है। न अधिक प्रसन्न होना चाहिए, न ही दुःखी होना चाहिए। हर स्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखना चाहिए। मन में शांति रहे, न द्वेष हो न राग। क्षमा करना बड़ा धर्म है। यदि कोई व्यक्ति कितना भी अपराध कर ले, पर वह गाय जैसा निष्कपट बन जाए, तो उसे क्षमा कर देना चाहिए। यही अहिंसा और समता की भावना है।

हमारे मन में अहिंसा और समता की भावना रहनी चाहिए। साधु तो त्याग, समता, क्षमा और अहिंसा की मूर्ति होते हैं। "तन कर, मन कर, वचन कर देत न काहु दुःख। तुलसी पातक झड़त है, देखत वा को मुख।" — साधु का दर्शन करने से भी पाप झड़ सकते हैं। संतों का गांव में आगमन शुभ होता है। सुत, दारा और लक्ष्मी तो पापियों को भी मिल सकती हैं, पर संत समागम और हरिकथा दुर्लभ होते हैं। संत पुरुषों की संगति से सद्ज्ञान और अच्छे संस्कार प्राप्त होते हैं। वे महाव्रतधारी, ग्रहत्यागी होते हैं। साधु को न नोट चाहिए, न वोट चाहिए, न प्लॉट चाहिए — बस गृहस्थों के जीवन की खोट को दूर करने का प्रयास करते हैं। समता मन में हो तो ही सच्चा सुख मिलता है। राग के समान कोई दुःख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं। साधु का संयम और त्याग ही उनका धन होता है। वे कंचन-कामिनी के त्यागी होते हैं।

शुद्ध साधु चाहे किसी देश, वेष या परिवेश में हों, वंदनीय होते हैं। यह संसार सौभाग्यशाली है जहाँ त्यागी संत उपस्थित हैं। जिसके पास संतोष धन आ जाता है, उसके पास सभी सुख आ जाते हैं — वह सबसे बड़ा सुखी होता है।

गृहस्थ भी जितना संभव हो, प्रतिदिन धर्म के लिए समय निकालें। गृहस्थ में रहते हुए भी कमलपत्र की तरह निर्लेप रहें। यदि घर में भी संतपुरुष की भांति जीवन जिया जाए, तो यह जीवन भी सफल हो सकता है और परलोक भी। मन में धर्म और आध्यात्मिकता की भावना रहे। शुद्ध वीतराग आत्मा का स्मरण करते रहें। यह मानव जीवन हमें अनमोल रूप में प्राप्त हुआ है — इसका सदुपयोग करें। क्षमा, करुणा और दया की भावना रखें।

पूज्यवर ने स्थानीय लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति — इन तीन प्रतिज्ञाओं को समझाकर संकल्प दिलवाए। पूज्यवर के स्वागत में एम.बी. हाईस्कूल के प्रिंसिपल किरीटभाई पटेल, मंत्री बाबुभाई पटेल और शाहपुर प्राथमिक विद्यालय के महेशभाई रावल ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# सुखी बनने के लिए सुकुमारता और कामना को छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

इडर।
23 मई, 2025

अध्यात्म के मंगल प्रवचनकार आचार्यश्री महाश्रमणजी ने इडर के अंजना पाटीदार एच.के.एम. कला एवं पी.एन. पटेल कॉमर्स कॉलेज प्रांगण में अध्यात्म की अमृत धारा बरसाते हुए फरमाया कि आदमी सुखी रहना चाहता है। दूसरे प्राणी भी सुखी रहना चाहते हैं, पर कभी सुखी रहने वाले भी दुःखी देखे जा सकते हैं।

वे कौन-से उपाय हैं, जिनको काम में लेकर आदमी सुखी रह सकता है? उपाय के संदर्भ में एक बात है — अपने आप को तपाना, सुकुमारता को छोड़ देना। जो तपस्वी होता है, कठोरता को झेल सकता है — वह सुखी रह सकता है। जो आदमी भौतिक सुख-सुविधाओं की मनोवृत्ति रखता है, वह दुःखी बन सकता है। कठोरता को सहन करने वाला सुखी हो सकता है।

सेवा करने वाला कार्यकर्त्ता जगह-जगह जाता है, कहीं पलंग मिलता है तो कहीं नहीं भी मिलता है। साधु तो ज़मीन पर ही लेटता है। साधु तो राजा-मुनिराज होता है। यह धरती बहुत सुंदर शय्या है, इसकी कोई सीमा नहीं होती। पलंग की तो स्थान की सीमा होती है। साधु के लिए तो भुजा ही तकिया है। चाँदनी रात में चाँद ही दीया होता है। साधु मन का राजा-महाराजा हो सकता है।

सुखी बनने का दूसरा उपाय है — काम-भोग व विषयों में आसक्ति मत रखो। द्वेष, ईर्ष्या मत करो — दुःख अपने आप अतिक्रांत हो जाएगा। दूसरों को सुखी देखकर दुःखी नहीं होना चाहिए और दूसरों को दुःखी देखकर सुखी नहीं बनना चाहिए। साधु तो निर्मोही होते हैं। समता-भाव में रहने वाला सुखी बन सकता है। तपस्वी बनकर कठोरता को अपनाओ, कामनाओं को अतिक्रांत करो — तो सुखी बन सकोगे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति रही है, जिसने ऋषि-महर्षियों का सम्मान बढ़ाया है। तेरापंथ के आचार्यों के पास अनेक लोग आते रहते हैं।

आचार्यश्री से शक्ति और ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है। जो व्यक्ति चरित्रसम्पन्न होता है, वह ऊर्जा और प्रकाश को प्राप्त कर सकता है। आचार्यवर लोगों को अच्छा, चरित्रवान बनने की प्रेरणा देते हैं। चरित्र हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है।

पूज्यवर के स्वागत में लक्ष्मीलाल झाबक, भाविक व प्रक्षाल खिंवेसरा, सीनियर सिटीजन प्रमुख सुथारभाई, कॉलेज से अश्विनभाई पटेल, यूनिक इंटरनेशनल स्कूल से मुकेशभाई पटेल, योगेशभाई पटेल आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने पच्चीस बोल पर सुंदर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## आचार्यश्री महाश्रमणजी : झलकियां

वडनगर के पुरातात्विक अनुभवात्मक संग्रहालय में आचार्य प्रवर

उम्मेदगढ़ के जे. एम. पटेल हाईस्कूल के संबंधित व्यक्तियों व ग्रामवासियों को सेवा कराते हुए पूज्यप्रवर

बडोली में 25 बोल की झांकी का अवलोकन करते पूज्य प्रवर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।